पलटू साहिब की बानी

(भाग पहला)

कुंडलियाँ

जिस में

उनकी २६६ अति मधुर, मनोहर औ
उपकारक कुंडलियाँ जीवन-चरित्र और
टिप्पनी सहित छपी हैं।

[कोई साहिब बिना इजाजत के इस पुस्तक को नहीं छाप सकते]

(*All Rights Reserved*)

प्रकाशक

बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स

इलाहाबाद

सातवीं बार]   सन् १९५६ ई०   [मूल्य १)

Printed and Published
at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By B. Sajjan.

जीवन-चरित्र

महात्मा पलटूदासजी (पलटू साहिब) के जीवन-चरित्र के हम बहुत दिनों से खोज में हैं परन्तु कहीं से पूरा हाल नहीं मिला यद्यपि कितने ही ग्रन्थ देखे गये और देश-देशान्तर के साधुओं, विद्वानों और निज पलटूपंथी महन्तों से दरियाफ्त किया गया। पलटूदासजी के सगे भाई और परम भक्त पलटू प्रसादजी ने (जिनका संसारी नाम कुछ और ही था) अपनी "भजनावली" नामक पुस्तक में थोड़ा सा हाल लिखा है जिससे यह निश्चय होता है कि पलटू साहिब ने नंगपुर जलालपुर गाँव में एक काँदू बनिया के कुल में जन्म लिया जिसे "भजनावली" में नंगाजलालपुर के नाम से लिखा है। यह गाँव फैजाबाद के जिले में आजमगढ़ के पच्छिम सीमा से मिला हुआ है, नंगाजलालपुर नाम का कोई गाँव आजमगढ़ या फैजाबाद के जिले में नहीं है। यहीं इनके पुरोहित गोविंदजी महाराज रहते थे और दोनों ने बाबा जानकीदास नामक साधू से उपदेश लिया था, पर उनको शांति नहीं मिली इसलिये सार वस्तु की खोज में दोनों निकले। गोविंदजी जगन्नाथपुरी को जा रहे थे कि रास्ते में भीखा साहिब के दर्शन मिले जिन से गुप्त भेद प्राप्त हुआ। तब गोविंदजी पलटू साहिब के पास लौट कर आये और उनसे सार वस्तु का उपदेश लेकर उन्हें गुरु धारन किया।

भजनावली के तीन दोहे यहाँ लिखे जाते हैं :—

नंगाजलालपुर जन्म भयो है, बसे अवध के खोर। कहै पलटूपरसाद हो, भयो जक्त में सोर।
चार बरन को मोटि के, भक्ति चलाई मूल। गुरु गोबिंद के बाग में, पलटू फूले फूल॥

सहर जलालपुर मूड़ मुड़ाया, अवध तुड़ा करधनियाँ।
सहज कर व्योपार घट में, पलटू निर्गुन बनियाँ॥

पलटू साहिब उन्नीसवें शतक विक्रमीय में वर्त्तमान थे—अवध के नवाब शुजाउद्दौला और हिन्दुस्तान के बादशाह शाह आलम इनके समकालीन थे, जिनको हुए डेढ सौ बरस का जमाना बीता। यह महात्मा सदा गृहस्थ आश्रम में रहे और इनके वंश के लोग अब तक नंगपुर जलालपुर के गाँव में मौजूद हैं।

पलटू साहिब बहुत काल तक फैजाबाद के अयोध्या नगर में बिराजमान थे जहाँ उन्होंने अपना सतसंग खड़ा किया और अपने उपदेश से अनेक जीवों को चिताया। इसी स्थान पर उन्होंने शरीर त्याग किया और वहाँ उनकी समाधि और संगत अब तक मौजूद है। और जगहों में भी इन महात्मा के अनुयाइयों की संगत हैं। साधू और पलटूपंथी साधू और गृहस्थ तो थोड़े बहुत भारतवर्ष के हर विभाग में पाये जाते हैं।

पलटू साहिब की प्रचंड महिमा और कीर्ति को देख कर अयोध्या और आस-पास के अखाड़ों के वैरागियों के चित्त में बड़ी जलन और ईर्षा पैदा हुई जिसका इशारा पलटूसाहिब ने अपनी बानी में भी जगह जगह पर किया है। कहते हैं कि यह ईर्षा इतनी बढ़ी कि इन दुष्टों ने गुट करके पलटू साहिब को जीते जी जला दिया परन्तु उसी समय और उसी देह से वह फिर जगन्नाथपुरी में प्रगट हुए और तत्काल ही फिर गुप्त हो गये। इसके प्रमाण में यह साखी दी हुई है :—

"अवधपुरी में जरि मुए, दुष्टन दिया जराइ। जगन्नाथ की गोद में पलटू सूते जाइ॥"

इनके बहुत से चमत्कार और मोजजे मुर्दों के जिलाने इत्यादि के प्रसिद्ध हैं जिनके यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं है।

मई १९१५ — अधम सम्पादक

विषय-सूची

पलटू साहिब भाग पहला

(कुंडलिया)

॥ गुरुदेव ॥

(१)

पूरा सतगुरु मिलै जो पूजै मन की आस ॥
पूजै मन की आस पिया को देय मिलाई ।
छूटा सब जंजाल बहुत सुख हम ने पाई ॥
देखा पिय का रूप फिरा अहिबात[1] हमारा ।
बहुत दिनन की राँड़ माँग भर सेँदुर धारा ॥
सासु ननद[2] को मारि अदल मैं दिहा चलाई ।
उन कै चलै न जोर पिया को मैंहि सुहाई ॥
पिय जो बस में भये पिया को जादू कीन्हा ।
ऐसी लागी नेह पिया तब मोको चीन्हा ॥
प्रसाद पिया को पाय के मिले गुरु पलटूदास ।
पूरा सतगुरु मिलै जो पूजै मन की आस ॥

(२)

सतगुरु सिकलीगर मिलैं तब छुटै पुराना दाग ॥
छुटै पुराना दाग गड़ा मन मुरचा माहीं ।
सतगुरु पूरे बिना दाग यह छूटै नाहीं ॥
झाँवाँ लेवै जोग तेग को मलै बनाई ।
जौहर देय निकार सुरत को रंद चलाई ॥
सब्द मस्कला करै ज्ञान का कुरँड[3] लगावै ।
जोग जुगत से मलै दाग तब मन का जावै ॥
पलटू सैफ़[4] को साफ करि बाढ़ धरै बैराग ।
सतगुरु सिकलीगर मिलैं तब छुटै पुराना दाग ॥

---

(१) सुहाग । (२) माया और वासना । (३) एक तरह का पत्थर जो सिक़ल करने के काम में आता है । (४) तलवार ।

(३)

सरबंगी कोउ एक है राखै सब की लाज ॥
राखैं सब की लाज काज वो सब के आवैं।
अंधा पंगुल लूल सबन को डगर बतावैं ॥
मारि पीटि संसार सभन को राह चलावैं।
उनकी मारी खाइ भेष सब रोटी पावैं ॥
बड़े बहादुर मर्द भेष का परदा राखैं।
सुनि कै बचन कठोर संत जन जनि कोऊ भाखैं ॥
पलटू जो कोउ संत है सब हमरे सिरताज।
सरबंगी कोउ एक है राखै सब की लाज ॥

(४)

पर स्वारथ के कारने संत लिया औतार ॥
संत लिया औतार जगत को राह चलावैं।
भक्ति करैं उपदेस ज्ञान दे नाम सुनावैं ॥
प्रीत बढ़ावैं जक्त में धरनी पर डोलैं।
कितनौ कहै कठोर बचन वे अमृत बोलैं ॥
उनको क्या है चाह सहत हैं दुःख घनेरा।
जिव तारन के हेतु मुलुक फिरते बहुतेरा ॥
पलटू सतगुरु पाय के दास भया निरवार।
पर स्वारथ के कारने संत लिया औतार ॥

(५)

धुन आनै जो गगन की सो मेरा गुरुदेव ॥
सो मेरा गुरुदेव सेवा मैं करिहौं वा की।
सब्द में है गलतान[१] अवस्था ऐसी जा की ॥
निस दिन दसा अरूढ़ लगै ना भूख पियासा।
ज्ञान भूमि के बीच चलत है उलटी स्वासा ॥
तुरिया सेती अतीत सोधि फिर सहज समाधी।

(१) लोटपोट, मस्त।

भजन तेल की धार साधना निर्मल साधी ॥
पलटू तन मन वारिये मिलै जो ऐसा कोउ ।
धुन आनै जो गगन की सो मेरा गुरुदेव ॥

(६)

नाव मिली केवट नहीं कैसे उतरै पार ॥
कैसे उतरै पार पथिक बिस्वास न आवै ।
लगै नहीं बैराग यार कैसे कै पावै ॥
मन में धरै न ज्ञान नहीं सतसंगति रहनी ।
बात करै नहिँ कान प्रीति बिन जैसे कहनी ॥
छूटि डगमगी नाहिँ संत को बचन न मानै ।
मूरख तजै बिबेक चतुरई अपनी आनै ॥
पलटू सतगुरु सब्द का तनिक न करै बिचार ।
नाव मिली केवट नहीं कैसे उतरै पार ॥

(७)

धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय ॥
चादर लीजै धोय मैल है बहुत समानी ।
चल सतगुरु के घाट भरा जहँ निर्मल पानी ॥
चादर भई पुरानि दिनोँ दिन बार न कीजै ।
सतसंगत में सौंद ज्ञान का साबुन दीजै ॥
छूटै कलमल दाग नाम का कलप लगावै ।
चलिये चादर ओढ़ि बहुर नहिँ भवजल आवै ॥
पलटू ऐसा कीजिये मन नहिँ मैला होय ।
धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय ॥

(८)

साहिब वही फकीर है जो कोइ पहुँचा होय ॥
जो कोइ पहुँचा होय नूर का छत्र बिराजै ।
सबर तखत पर बैठि तूर अठपहरा बाजै ॥

तम्बू है असमान जमीं का फरस बिछाया।
छिमा किया छिड़काव खुसी का मुस्क लगाया॥
नाम खजाना भरा जिकिर का नेजा चलता।
साहिब चौकीदार देखि इबलीसहुँ[1] डरता॥
पलटू दुनिया दीन में उन से बड़ा न कोय।
साहिब वही फकीर है जो कोइ पहुँचा होय॥

(९)

रैयत कौन कहावै घर घर हाकिम होय॥
घर घर हाकिम होय अदल फिर कौन चलावै।
सब नायक होइ जाय बैल फिर कौन लदावै॥
गदहा चलै हर बैल कौन फिर बेसहै तुरकी[2]।
मिलै कूप में मुक्ति गंग को देवै बुड़की॥
काँच छुए होइ कनक पारस की रहै न इच्छा।
घर घर सम्पति होइ कौन फिर माँगै भिच्छा॥
पलटू तैसे संत हैं भेष बनावै कोय।
रैयत कौन कहावै घर घर हाकिम होय॥

(१०)

जग खीझै तो का भया रीझै सतगुरु संत॥
रीझै सतगुरु संत आस कुछ जग की नाहीं।
एक द्वार को छोड़ और ना माँगन जाही॥
जिउ मेरो बरु जाय जन्म बरु जाय नसाई।
करों न दूसर आस संत की करों दुहाई॥
तीन लोक रिसियाय[3] सकल सुर नर और नारी।
मोर न बाँकै बार पठंगा पाया भारी॥
पलटू सब रोवै पड़ा मोर भया सलतंत।
जग खीझै तो का भया रीझै सतगुरु संत॥

(१) शैतान भी। (२) घोड़ा मोल ले। (३) रुष्ट हो।

॥ नाम ॥

(११)

नाम नाम सब कहत है नाम न पाया कोय ॥
नाम न पाया कोय नाम की गति है न्यारी ।
वही सकस[१] को मिलै जिन्हों ने आसा मारी ॥
हाँ को करै खमोस होस ना तन को राखै ।
गगन गुफा के बीच पियाला प्रेम का चाखै ॥
बिसरै भूख पियास जाय मन रँग में लागै ।
पाँच पचीस रहे वार संग में सोऊ भागै ॥
आपुइ रहै अकेल बोलै बहु मीठी बानी ।
सुनतै अब वह बनै कहा मैं कहौं बखानी ॥
पलटू गुरु परताप तें रहै जगत में सोय ।
नाम नाम सब कहत है नाम न पाया कोय ॥

(१२)

लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय ॥
जो चाहै सो लेय जायगी लूट ओराई[२] ।
तुम का लुटिहो यार गाँव जब दहिहै[३] लाई ॥
ताकै कहा गँवार मोट भर बाँध सिताबी ।
लूट में देरी करै ताहि की होय खराबी ॥
बहुरि न ऐसा दाँव नहीं फिर मानुष होना ।
क्या ताकै तू ठाढ़ हाथ से जाता सोना ॥
पलटू मैं उतृन भया मोर दोस जिन देय ।
लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय ॥

(१३)

मीठ बहुत सतनाम है पियत निकारै जान ॥
पियत निकारै जान मरै की करै तयारी ।
सो वह प्याला पियै सीस को धरै उतारी ॥

---

(१) आदमी । (२) खतम । (३) जलावैगा ।

आँख मूँदि कै पियै जियन की आसा त्यागै।
फिरि वह होवै अमर मुए पर उठि कै जागै॥
हरि से वे हैं बड़े पियो जिन हरि रस जाई।
ब्रह्मा बिस्नु महेस पियत कै रहे डेराई॥
पलटू मेरे बचन को ले जिज्ञासू मान।
मीठ बहुत सतनाम है पियत निकारै जान॥

(१४)

संत सनेही नाम है नाम सनेही संत।
नाम सनेही संत नाम को वही मिलावैं॥
वे हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावैं।
जप तप तीरथ बरत करै बहुतेरा कोई॥
बिना वसीला संत नाम से भेंट न होई।
कोटिन करै उपाय भटक सगरो[1] से आवै॥
संत दुवारे जाय नाम को घर तब पावै।
पलटू यह है प्रान पर[2] आदि सेती औ अंत॥
संत सनेही नाम है नाम सनेही संत।

(१५)

दीपक बारा नाम का महल भया उजियार॥
महल भया उजियार नाम का तेज बिराजा।
सब्द किया परकास मानसर[3] ऊपर छाजा॥
दसो दिसा भई सुद्ध बुद्ध भई निर्मल साची।
छुटी कुमति की गाँठि सुमति परगट होय नाची॥
होत छतीसो राग दाग तिर्गुन का छूटा।
पूरन प्रगटे भाग करम का कलसा फूटा॥
पलटू अँधियारी मिटी बाती दीन्ही टार।
दीपक बारा नाम का महल भया उजियार॥

(१) सब। (२) परे। (३) नाम पारब्रह्मांड के तालाब का।

(१६)

नाम के रे परताप से भये आन के आन ॥
भये आन के आन बड़े के पाँव पड़ँूगा ।
का बपुरा तिल तेल फूल संग निकता महँगा ॥
संत हैं बड़े दयाल आप सम मो को कीन्हा ।
जैसे भृंगी कीट सिच्छा कुछ ऐसी दीन्हा ॥
राई किहा सुमेर अजया गजराज चढ़ाई ।
तुलसी होइगा रेंड़ सरन की पैज बड़ाई ॥
पलटू जातिन नीच में सब औगुन की खान ।
नाम के रे परताप से भये आन के आन ॥

(१७)

देखौ नाम प्रताप से सिला तिरै[१] जल बीच ॥
सिला तिरै जल बीच सेत[२] में कटक[३] उतारी ।
नामहिं के परताप बानरन[४] लंका जारी ॥
नामहिं के परताप जहर मीरा ने खाई ।
नामहिं के परताप बालक पहलाद बचाई ॥
पलटू हरि जस ना सुनै ता को कहिये नीच ।
देखौ नाम प्रताप से सिला तिरै जल बीच ॥

(१८)

हाथी घोड़ा खाक है कहै सुनै सो खाक ॥
कहै सुनै सो खाक खाक है मुलुक खजाना ।
जोरू बेटा खाक खाक जो साचै माना ॥
महल अटारी खाक खाक है बाग बगैचा ।
सेत सपेदी खाक खाक है हुक्का नैचा ॥
साल दुसाला खाक खाक मोतिन के माला ।
नौबतखाना खाक खाक है ससुरा साला ॥

(१) तैरती है । (२) पुल । (३) फ़ौज, सेना । (४) बन्दरों ने ।

पलटू नाम खुदाय का यही सदा है पाक।
हाथी घोड़ा खाक है कहै सुनै सो खाक॥

(१९)

हाथ जोरि आगे मिलै लै लै भेट अमीर॥
लै लै भेट अमीर नाम का तेज बिराजा।
सब कोउ रगरै नाक आइ कै परजा राजा॥
सकलदार[१] मैं नहीं नीच फिर जाति हमारी।
गोड़ धोय षट करम बरन पीवै लै चारी॥[२]
बिन लसकर बिन फौज मुलुक मैं फिरी दुहाई।
जन महिमा सतनाम आपु मैं सरस बड़ाई॥
सत्तनाम के लिहे से पलटू भया गँभीर।
हाथ जोरि आगे मिलै लै लै भेट अमीर॥

॥ सामर्थ ॥

(२०)

अदल होइ बैकुंठ मैं सब कोइ पावै सुक्ख॥
सब कोइ पावै सुक्ख अमल है तेज[३] तुम्हारा।
भौसागर के बीच लगै ना उतरत बारा॥
लेइ तुम्हारो नाम ताहि को बार न बाँकै।
खुले-बंद[४] वह जाइ तनिक जमदूत न ताकै॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस नाम सुनि उठै डेराई।
तीन लोक के बीच फिरै ना आन दुहाई॥
पलटू तेरी साहिबी जीव न पावै दुक्ख।
अदल होइ बैकुंठ मैं सब कोइ पावै सुक्ख॥

(२१)

देत लेत हैं आपुहीं पलटू पलटू सोर॥
पलटू पलटू सोर राम की ऐसी इच्छा।
कौड़ी घर मैं नाहिं आपु मैं माँगौं भिच्छा॥

(१) खूबसूरत। (२) छहो कर्म वाले और चारो बरन के लोग चरनामृत लेकर पीते हैं। (३) प्रचंड। (४) बिना रोक टोक के।

राई परबत करैं करैं परबत को राई।
अदना के सिर छत्र पैज की करैं बड़ाइ॥
लीला अगम अपार सकल घट अंतरजामी।
खाँहिं खिलावहिं राम देहिं हम को बदनामी॥
हम सों भया न होयगा साहिब करता मोर।
देत लेत हैं आपुहीं पलटू पलटू सोर॥

॥ संत और साध ॥

(२२)

बड़ा होय तेहि पूजिये संतन किया बिचार॥
संतन किया बिचार ज्ञान का दीपक लीन्हा॥
देवता तेंतिस कोट नजर में सब को चीन्हा॥
सब का खंडन किया खोजि के तीनि निकारा।
तीनों में दुइ सही मुक्ति का एकै द्वारा।
हरि को लिया निकारि बहुर तिन मंत्र बिचारा।
हरि हैं गुन के बीच संत हैं गुन से न्यारा।
पलटू प्रथमै संत जन दूजे हैं करतार।
बड़ा होय तेहि पूजिये संतन किया बिचार॥

(२३)

सीतल चन्दन चन्द्रमा तैसे सीतल संत॥
तैसे सीतल संत जगत की ताप बुझावैं।
जो कोइ आवै जरत मधुर मुख बचन सुनावैं॥
धीरज सील सुभाव छिमा ना जात बखानी।
कोमल अति मृदु बैन बज्र को करते पानी॥
रहन चलन मुसकान ज्ञान को सुगँध लगावैं।
तीन ताप मिट जाय संत के दर्सन पावैं॥
पलटू ज्वाला उदर की रहै न मिटै तुरंत।
सीतल चन्दन चन्द्रमा तैसे सीतल संत॥

(२४)

संत बराबर कोमल दूसर को चित नाहिँ ॥
दूसर को चित नाहिँ करैँ सब ही पर दाया।
हित अनहित सब एक असुभ सुभ हाथ बनाया ॥
कोमल कुसुमी चाह[१] नहीँ सुपने मेँ दूषन।
देखैँ परहित लागि प्रेम रस चूखैँ ऊखन[२] ॥
मिलनसार मुसकान बचन मृदु बोली मीठी।
पुलकित सीतल गात सुभग रतनारी दीठी[३] ॥
पलटू कौनो कछु कहै तनिको ना अकुताहिँ।
संत बराबर कोमल दूसर को चित नाहिँ ॥

(२५)

राम समीपी संत हैँ वे जो करैँ सो होय ॥
वे जो करैँ सो होय हुकुम मेँ उन के साहिब।
संत कहैँ सोइ करैँ राम ना करते बायब[४] ॥
राम के घर के बीच काम सब संतै करते।
देवता तैँतिसकोट संत से सबही डरते ॥
राई पर्बत करैँ करैँ परवत को राइ।
राम के घर के बीच फिरत है संत दुहाई ॥
पलटू घर मेँ राम के और न करता कोय।
राम समीपी संत हैँ वे जो करैँ सो होय ॥

(२६)

संत सासना सहत हैँ जैसे सहत कपास ॥
जैसे सहत कपास नाय चरखा में ओटैं।
रूई धर जब तुमै हाथ से दोऊ निभोटैं ॥
रोम रोम अलगाय पकरि कै धुनिया धूनी।
पिउनी[५] नँह[६] दै कात सूत ले जुलहा बूनी ॥

(१) कुसुम फूल के समान वृत्ति जो बड़ा नाज़ुक होता है। (२) गन्ने चूसैं (३) दृष्टि। (४) खिलाफ। (५) रुई की मोटी बत्ती ज़िससे सूत निकालते हैं। (६) नाखून।

धोबी भट्ठी पर धरी कुन्दीगर मुँगरी मारी।
दरजी टुक टुक फारि जोरि कै किया तयारी॥
पर-स्वारथ के कारने दुख सहै पलटूदास।
संत सासना सहत हैं जैसे सहत कपास॥

(२७)

संतन के सिर ताज है सोई संत होइ जाय॥
सोई संत होइ जाय रहै जो ऐसी रहनी।
मुख से बोलै साच करै कछु उज्जल करनी॥
एक भरोसा करै नहीं काहू से माँगै।
मन में करै सँतोष तनिक ना कबहूँ लागै॥
भली बुरी कोउ कहै ताहि सुन नहिं मन माखै[१]।
आठ पहर दिन रात नाम की चरचा राखै॥
पलटू रहै गरीब होय भूखे को दे खाय।
संतन के सिर ताज है सोई संत होइ जाय॥

(२८)

तीन लोक से जुदा है उन संतन की चाल॥
उन संतन की चाल करम से रहते न्यारे।
लोभ मोह हंकार ताहि की गरदन मारे॥
काम क्रोध कछु नाहिँ लगै ना भूख पियासा।
जियते मिर्तक रहैं करैं ना जग की आसा॥
ऋद्धि सिद्धि को देख देत हैं खाक चलाई।
माया से निर्वित्त भजन की करैं बड़ाई॥
सभै चबैना काल का पलटू उन्हैं न काल।
तीन लोक से जुदा है उन संतन की चाल॥

(२९)

फाका जिकर किनात[२] ये तीनों बात जगीर॥
तीनों बात जगीर खुसी की कफनी डारे।

(१) रोस करै। (२) उपास, सुमिरन और संतोष।

दिल को करै कुसाद[1] आई भी रोजी टारै।
इबादत[2] दिन रात याद में अपनी रहना।
खुदी खूब को खोइ जनाजा[3] जियतै करना॥
सीकन्दर और गदा[4] दोऊ को एकै जानै।
तब पावै टुक नसा फ़ना[5] का प्याला छानै॥
पलटू मस्त जो हाल में तिसका नाम फ़कीर।
फ़ाका जिकर किनात ये तीनों बात जगीर॥

(३०)

कबही फ़ाका फ़कर है कबही लाख करोर॥
कबही लाख करोर गमी सादी कछु नाहीं।
ज्यौं खाली त्यौं भरा सबुर है मन के माहीं॥
कबही फूलन सेज हाथी की है असवारी।
कबही सोवै भुईं पियादे मँजिल गुजारी॥
कबही मलमल जरी ओढ़ते साल दुसाला।
कबही तापै आग ओढ़ि रहते मृगछाला॥
पलटू वह यह एक है परालब्ध नहिँ जोर।
कबही फ़ाका फ़क्कर है कबही लाख करोर॥

(३१)

साध महातम बड़ा है जैसो हरि यस होय॥
जैसो हरि यस होय ताहि को गरहन कीजै।
तन मन धन सब वारि चरन पर तेकरे दीजै॥
नाम से उत्पति राम संत अनाम[6] समाने।
सब से बड़ा अनाम नाम की महिमा जाने॥
संत बोलते ब्रह्म चरन कै पियै पखारन।
बड़ा महापरसाद सीत संतन कर छाड़न॥

---

(१) उदार। (२) आराधना। (३) रथी या टिकटी मुरदे के लेजाने की। (४) सिकदर बादशाह और भिखारी। (५) मौत। (६) अनामी पद मे।

पलटू संत न होवते नाम न जानत कोय।
साध महातम बड़ा है जैसो हरि यस होय॥

(३२)

॥ भक्त जन ॥

हरि हरिजन को दुइ कहै सो नर नरकै जाय॥
सो नर नरकै जाय हरिजन अंतर नाहीं।
फूलन में ज्यों बास रहैं हरि हरिजन माहीं॥
संत रूप अवतार आप हरि धरि के आये।
भक्ति करे उपदेस जगत को राह चलाये॥
और धरै अवतार रहै निर्गुन संजुक्ता।
संत रूप जब धरै रहै निर्गुन से मुक्ता॥
पलटू हरि नारद सेती बहुत कहा समुझाय।
हरि हरिजन को दुइ कहै सो नर नरकै जाय॥

(३३)

हरि अपनो अपमान सह जन की सही न जाय॥
जन की सही न जाय दुर्बासा की क्या गति कीन्हा[१]।
भुवन चतुर्दस फिरे सभै दरियाय जो दीन्हा॥
पाहि पाहि करि परे जबै हरि चरनन जाई।
तब हरि दीन्ह जवाब मोर बस नाहिं गुसाईं॥
मोर द्रोह करि बचै करौं जन द्रोहक नासा।
माफ करैं अंबरीक बचौगे तब दुर्बासा॥
पलटू द्रोही संत कर तिन्हैं सुदर्सन खाय।
हरि अपनो अपमान सह जन की सही न जाय॥

---

(१) दुर्बासा ऋषि ने भक्त शिरोमणि राजा अंबरीक का प्रण तोड़ने को एकादशी के व्रत के पारन के लिए द्वादशी का न्योता राजा का माना। जब द्वादशी बीतने लगी और ऋषि जी न आये तो राजा ने व्रत का धर्म निबाहने को शालिगराम का चरणामृत लिया कि तुर्त ऋषि जी पहुँचे और सराप देना चाहा। यह अनर्थ देख कर बिष्णु ने सुदर्शन चक्र को उन पर छोड़ा जिस से बचने को वह आप बिष्णु तक की शरण मे गये लेकिन कोई उन्हें न बचा सका जब तक कि वह राजा अंबरीक की शरण में न आये।

(३४)

काम क्रोध जिन के नहीँ लगै न भूख पियास ॥
लगै न भूख पियास रहै तिरगुन से न्यारा ।
लोभ मोह हंकार नीँद की गर्दन मारा ॥
सत्रु मित्र सब एक एक है राजा रंका ।
दुख सुख जीवन मरन तनिक ना ब्यापै संका ॥
कंचन लोहा एक एक है गरमी पाला ।
अस्तुति निन्दा एक एक है नगन दुसाला ॥
पलटू उन के दरस से होत पाप को नास ।
काम क्रोध जिन के नहीँ लगै न भूख पियास ॥

(३५)

ना काहू से दुष्टता ना काहू से रोच[१] ॥
ना काहू से रोच दोऊ को इक-रस जाना ।
बैर भाव सब तजा रूप अपना पहिचाना ॥
जो कंचन सो काँच दोऊ की आसा त्यागी ।
हारि जीत कछु नाहिँ प्रीति इक हरि से लागी ॥
दुख सुख संपति बिपति भाव ना यहु से दूजा ।
जो बाम्हन सो सुपच[२] दृष्टि सम[३] सब की पूजा ॥
ना जियने की खुसी है पलटू मुए न सोच ।
ना काहू से दुष्टता ना काहू से रोच ॥

॥ पाखंडी ॥

(३६)

पिसना पीसै राँड़ री पिउ पिउ करै पुकार ॥
पिउ पिउ करै पुकार जगत को प्रेम दिखावै ।
कहवै कथा पुरान पिया को तनिक न भावै ॥
खिन रोवै खिन हँसै ज्ञान की बात बतावै ।
आप न रीझै भाँड और को बैठि रिझावै ॥

(१) रुचि, प्यार । (२) डोम । (३) बराबर ।

सूनै न वा की बात तनिक जो अंतर जानी।
चाहै भेटा पीव चलै ना सुपथ रहानी॥
पलटू ऊपर से कहै भीतर भरा बिकार।
पिसाना पीसै राँड़ री पिव पिव करै पुकार॥

(३७)

पर दुख कारन दुख सहै सन असंत है एक॥
सन असंत है एक काट के जल में सारै।
कूँचै खैंचै खाल उपर से मुँगरा मारै॥
तेकर बटि के भाँजि भाँज के बरतै रसरा।
नर की बाँधै मुसुक बाँधते गउ और बछरा॥
अमरजाल फिर होय बभावै जलचर[१] जाई।
खग मृग जीवा जंतु तेही में बहुत बझाई॥
जिव दे जिव संतावते[२] पलटू उन की टेक।
पर दुख कारन दुख सहै सन असंत है एक॥

(३८)

बिस्वा किये सिंगार है बैठी बीच बजार॥
बैठी बीच बजार नजारा सब से मारै।
बातैं मीठी करै सभन की गाँठि निहारै॥
चोवा चंदन लाइ पहिरि के मलमल खासा।
पंचभतारी भई करै औरन की आसा॥
लेइ खसम को नाँव खसम से परिचै नाहीं।
बेचि बड़न को नाँव सभन को ठगि ठगि खाही॥
पलटू तेकर बात है जेकरे एक भतार।
बिस्वा किये सिंगार है बैठी बीच बजार॥

(३९)

हवा हिरिस पलटू लगी नाहक भये फकीर॥
नाहक भये फकीर पीर की सेवा नाहीं॥

---

(१) जल में रहने वाले जीव जन्तु। (२) दूसरे जीव को सताने के निमित्त अपने जीव पर कष्ट सहते हैं।

अपने मुँह से बड़े कहावैं सब से जाहीं ॥
घमधूसर होइ रहे बात में सब से लड़ते ।
लाम काफ़[1] वो कहैं इमान को नाहीं डरते ॥
हमहीं हैं दुरवेस[2] और ना दूसर कोई ।
सब को देहिँ मुराद यकीन से ओकरे होई ॥
मन मुरीद होवै नहीं आप कहावैं पीर ।
हवा हिरिस पलटू लगी नाहक भये फकीर ॥

(४०)

जौं लगि फाटै फिकिर ना गई फकीरी खोय ॥
गई फकीरी खोय लगी है मान बड़ाई ।
मोर तोर में परा नाहिँ छूटी दुचिताई ॥
दुख सुख संपति बिपति सोच दोऊ की लागी ।
जीवन की है चाह मरन की डेर नहिँ त्यागी ॥
कौड़ी जिव के संग रैन दिन करै कलपना ।
दुष्ट[3] कँहै दुख देइ मित्र को जानै अपना ॥
पलटू चिंता लगी है जनम गँवाये रोय ।
जौं लगि फाटै फिकिर ना गई फकीरी खोय ॥

॥ चितावनी ॥

(४१)

क्या सोवै तू बावरी चाला जात बसंत ॥
चाला जात बसंत कंत ना घर में आये ।
धृग जीवन है तोर कंत बिन दिवस गँवाये ॥
गर्ब गुमानी नारि फिरै जोबन की माती ।
खसम रहा है रूठि नहीं तू पठवै पाती ॥
लगै न तेरो चित्त कंत को नाहिँ मनावै ।
का पर करै सिंगार फूल की सेज बिछावै ॥

(१) गाली देना। (२) सच्चे फ़क़ीर। (३) शत्रु।

पलटू ऋतु भरि खेलि ले फिर पछितैहै अंत।
क्या सोवै तू बावरी चाला जात बसंत॥

(४२)

खेलु सिताबी फाग तू बीती जात बहार॥
बीती जात बहार सम्बत लगने पर आया।
लीजै डफ्फ बजाय सुभग मानुष तन पाया॥
खेलो घूँघट खोलि लाज फागुन में नाहीँ।
जे कोउ करिहै लाज काज ना सपनेहुँ माहीँ॥
प्रेम की माट भराय सुरति की करु पिचुकारी।
ज्ञान अबीर बनाय नाम की दीजै गारी॥
पलटू रहना है नहीँ सुपना यह संसार।
खेलु सिताबी फाग तू बीती जात बहार॥

(४३)

तू क्योँ गफलत में फिरै सिर पर बैठा काल॥
सिर पर बैठा काल दिनो दिन वादा पूजै।
आज काल में कूच मुरख नहिँ तोकँह सूझै॥
कौड़ी कौड़ी जोरि ब्याज दे करते बट्टा।
सुखी रहै परिवार मुक्ति में होवत ठट्ठा॥
तू जानै मैं ठग्यो आप को तुही ठगावै।
नाम सजीवन मूर छोरि के माहुर खावै॥
पलटू सेखी ना रही चेत करो अब लाल।
तू क्योँ गफलत में फिरै सिर पर बैठा काल॥

(४४)

गरमै गरमै हेलुवा गंफा लीजै मारि॥
गंफा लीजै मारि मनुष तन जात सिराना।
भजि लीजै भगवान काल सिर पर नियराना॥
मीठा है हरि नाम जियन का नाहिँ भरोसा।

खाय लेहु भरि पेट आगे से जात परोसा ।।
लीजै लाहा लूटि दिना दुइ संतन पासा ।
अज हूँ चेत गँवार जात है खाली स्वासा ।।
पलटू अटक न कीजिये कूच है साँझ सकारि ।
गरमै गरमै हेलुवा गंफा लीजै मारि ।।

(४५)

सुर नर मुनि जोगी जती सभै काल बसि होय ।।
सभै काल बसि होय मौत कालौ की होती ।
पारब्रह्म भगवान मरै ना अबिगत जोती ।।
जा को काल डेराय ओट ताही की लीजै ।
काल की कहा बसाय भक्ति जो गुरु की कीजै ।।
जरामरन मिटि जाय सहज में औना जाना ।
जपि कै नाम अनाम संत जन तत्व समाना ।।
बैद धनंतर मरि गया पलटू अमर न कोय ।
सुर नर मुनि जोगी जती सभै काल बसि होय ।।

(४६)

चोला भया पुराना आज फटै की काल ।।
आज फटै की काल तेहू पै है ललचाना ।
तीनोँ पन गे बीत भजन का मरम न जाना ।।
नख सिख भये सपेद तेहू पर नाहीँ चेतै ।
जोरि जोरि धन धरै गला औरन का रेतै ।।
अब का करिहो यार काल ने किहा तगादा ।
चलै न एकौ जोर आय जब पहुँचा वादा ।।
पलटू तेहु पै लेत है माया मोह जँजाल ।
चोला भया पुराना आज फटै की काल ।।

(४७)

धूआँ का धौरेहरा ज्योँ बालू की भीत ।।
ज्योँ बालू की भीत ताहि को कौन भरोसा ।।

ज्यौं पक्का फल डारि गिरत से लगै न दोसा ॥
कच्चे घड़े ज्यौं नीर पानी के बीच बतासा ।
दारू[1] भीतर अगिनि जिवन की ऐसी आसा ॥
पलटू नर तन जात है घास के ऊपर सीत ।
धूआँ का धौरेहरा ज्यौं बालू की भीत ॥

(४८)

यही दिदारी दार[2] है सुनहु मुसाफिर लोग ॥
सुनहु मुसाफिर लोग भेट फिरि बहुरि न होना ।
को तुम को हम आय मिले सपने में सोना ॥
हिल मिल दिन दस रहे ताहि को सोच न कीजै ।
कोऊ है थिर नाहिँ दोस ना हम को दीजै ॥
अहिर बाँधि के गाय एक लेहड़े में आनी ।
कूवाँ की पनिहारि गई ले घर घर पानी ॥
पलटू मछरी आम ज्यौं नदी नाव संजोग ।
यही दिदारी दार है सुनहु मुसाफिर लोग ॥

(४९)

आग लगी लंका दहै उनचासो बही बयार ॥
उनचासो बही बयार ताहि को कौन बचावै ।
घर के प्रानी रहे सोऊ आगी गुहरावैँ ॥
फूटी घर की नारि सगा भाई अलगाना ।
बड़े मित्र जो रहे भये सब सत्रु समाना ॥
कंचन कौ सब नगर रती कौ रावन तरसै ।
दिया सिन्धु ने थाह ऊपर से पर्बत बरसै ॥
पलटू जेहि ओर राम हैं तेहि ओर सब संसार ।
आग लगी लंका दहै उनचासो बही बयार ॥

(५०)

भजन आतुरी[3] कीजिये और बात में देर ॥
और बात में देर जगत में जीवन थोरा ।

(१) लकड़ी । (२) सराय । (३) जल्दी, बिना टाल टूल के ।

मानुष तन धन जात गोड़ धरि करौ निहोरा ॥
काँचे महल के बीच पवन इक पंछी रहता ।
दस दरवाजा खुला उड़न को नित उठि चहता ॥
भजि लीजे भगवान एही में भल है अपना ।
आवागौन छुटि जाय जनम की मिटै कलपना ॥
पलटू अटक न कीजिये चौरासी घर फेर ।
भजन आतुरी कीजिये और बात में देर ॥

(५१)

यही समय गुरु पाँय में गोता लीजै खाय ॥
गोता लीजै खाय नाम के सरवर[१] माहीँ ।
अवधि आइ नगिचान दाँव फिर ऐसा नाहीँ ॥
मानुष तन सकराँत महोदधि[२] जात सिरानी ।
ऐसी परबी पाइ नहीँ तुम महिमा जानी ॥
सतसंगत के घाट पैठि कै कर असनाना ।
तन मन दीजे दान बहुरि नहिँ औना जाना ॥
पलटू बिलम न कीजिये ऐसा औसर पाय ।
यही समय गुरु पाँय में गोता लीजै खाय ॥

(५२)

भया तगादा साहु का गया बहाना भूल ॥
गया बहाना भूल नफा में मूर गँवाया ।
भया साहु से झूठ बैठि के पूँजी खाया ॥
नहीँ लिहा हरि नाम करी नहिँ संतन सेवा ।
तीनों पन गये बीत पूजते देवी देवा ॥
सारी सरहज सास धाइ के लूटि मजा री ।
तुम्हरे सीस बिसान कोऊ ना संग तुम्हारी ॥

---

(१) तालाब । (२) नदी, समुद्र ।

पलटू मानै काल ना कठिन चलावै सूल।
भया तगादा साहु का गया बहाना भूल॥

(५३)

काल महासिल[१] साहु का सिर पर पहुँचा आय॥
सिर पर पहुँचा आय उजुर कछु एकौ नाहीं।
पहुँचा धै अगुआय[२] लिहे धरि मारत जाहीं॥
मार परे भा चेत लगा तब करन बिचारा।
मूरख के परसंग बैठि कै बात बिगारा॥
चलै न एकौ जोर बहाना का को लेवै।
नहीँ ब्याज नहिँ मूर साहु को का लै देवै॥
पलटू वादा[३] टरि गया पूँजी गई वराय[४]।
काल महासिल साहु का सिर पर पहुँचा आय॥

(५४)

ज्योँ ज्योँ सूखै ताल है त्योँ त्योँ मीन मलीन॥
त्योँ त्योँ मीन मलीन जेठ मेँ सूख्यो पानी।
तीनोँ पन गये बीति भजन का मरम न जानी॥
कँवल गये कुम्हिलाय हंस ने किया पयाना।
मीन लिया कोउ मारि ठाँव ढेला चिहराना[५]॥
ऐसी मानुष देह बृथा मेँ जात अनारी।
भूला कौल करार आप से काम बिगारी॥
पलटू बरस औ मास दिन पहर घड़ी पल छीन।
ज्योँ ज्योँ सूखै ताल है त्योँ त्योँ मीन मलीन॥

(५५)

बूड़ी जात जहाज है नाम निवर्तिक[६] बोल॥
नाम निवर्तिक बोल हाथ से तेरे जाती।

(१) तहसील करनेवाला सिपाही। (२) पहुँचा पकड़ कर आगे कर लिया जिसमें भाग न सके। (३) इक़रार। (४) चुक गई। (५) पानी के सूख जाने पर तलैया की तली फट कर मट्टी के थक्के बन जाते हैं। (६) बचाने वाला।

माँझ धार में फटी सूम की जोगवै थाती।
ऐसे मूरख लोग लालच में जनम गँवावैं॥
गई हाथ से चीज तेहू पर लेखा लावैं॥
कंठा रूँधन भये मोह में लागा अजहूँ।
कीन्हे प्रान पयान नाम ना सुमिरे तबहूँ॥
पलटू नर तन रतन सम भा कौड़ी के मोल।
बूड़ी जात जहाज है नाम निवर्तिक बोल॥

॥ भक्ति ॥

(५६)

एक भक्ति मैं जानौं और झूठ सब बात॥
और झूठ सब बात करै हठजोग अनारी।
ब्रह्म दोष वो लेय काया को राखै जारी॥
प्रान करै आयाम कोई फिर मुद्रा साधै।
धोती नेती करै कोई लै स्वासा बाँधै॥
उनमुनि लावै ध्यान करै चौरासी आसन।
कोई साखी सबद कोइ तप कुस के डासन॥
पलटू सब परपंच है करै सो फिर पछितात।
एक भक्ति मैं जानौं और झूठ सब बात॥

(५७)

संत न चाहैं मुक्ति को नहीं पदारथ चार॥
नहीं पदारथ चार मुक्ति संतन को चेरी।
ऋद्धि सिद्धि पर थुकैं स्वर्ग की आस न हेरी॥
तीरथ करहिं न बर्त नहीं कछु मन में इच्छा।
पुन्य तेज परताप संत को लगै अनिच्छा॥
ना चाहैं बैकुंठ न आवागवन निवारा।
सात स्वर्ग अपबर्ग तुच्छ सम ताहि बिचारा॥

पलटू चाहै हरि भगति ऐसा मता हमार।
संत न चाहैं मुक्ति को नहीं पदारथ चार॥

(५८)

ऐसी भक्ति चलावै मची नाम की कीच॥
मची नाम की कीच बूढ़ा औ बाला गावै।
परदे में जो रहै सब्द सुनि रोवत आवै॥
भक्ति करै निरधार रहै तिर्गुन से न्यारा।
आवै देय लुटाय आपु ना करै अहारा॥
मन सब को हरि लेय सभन को राखै राजी।
तीन देख ना सकै बैरागी पंडित काजी॥
पलटूदास इक बानिया रहै अवध के बीच।
ऐसी भक्ति चलावै मची नाम की कीच॥

॥ प्रेम॥

(५९)

मेरे तन तन लग गई पिय की मीठी बोल॥
पिय की मीठी बोल सुनत मैं भई दिवानी।
भँवरगुफा के बीच उठत है सोहं बानी॥
देखा पिय का रूप रूप में जाय समानी।
जब से भया मिलाप मिले पर ना अलगानी।
प्रीत पुरानी रही लिया हमने पहिचानी।
मिली जोत में जोत सुहागिन सुरत समानी॥
पलटू सब्द के सुनत ही घूँघट डारा खोल।
मेरे तन तन लग गई पिय की मीठी बोल॥

(६०)

पिय को खोजन मैं चली आपुइ गई हिराय।
आपुइ गई हिराय कवन अब कहै सँदेसा।

जेकर पिय में ध्यान भई वह पिय के भेसा ॥
आगि माहिँ जो परै सोऊ अग्नी ह्वै जावै ।
भृंगी कीट को भेँट आपु सम लेइ बनावै ॥
सरिता बहि के गई सिंध में रही समाई ।
सिव सक्ती के मिले नहीं फिर सक्ती आई ॥
पलटू दिवाल कहकहा[1] मत कोउ झाँकन जाय ।
पिय को खोजन मैं चली आपुइ गई हिराय ॥

(६१)

मगन भई मेरी माइजी जब से पाया कंथ ॥
जब से पाया कंथ पंथ सतगुरु बतलाया ।
सतगुरु बड़े दयाल करी उन मो पर दाया ॥
स्वस्ता[2] मन में आइ छुटी मेरी दुचिताई ।
सोऊँ कंथ के साथ अंग से अंग लगाई ॥
अभ्यन्तर[3] जागी प्रीति निरन्तर कंथ से लागी ।
दरस परस के करत जगत की भ्रमना भागी ॥
पलटू सतगुरु सब्द सुनि हृदय खुला है ग्रंथ ।
मगन भई मेरी माइजी जब से पाया कंथ ॥

(६२)

आठ पहर निरखत रहै जैसे चन्द चकोर ॥
जैसे चन्द चकोर पलक से टारत नाहीं ।
चुगै बिरह से आग रहै मन चन्दै माहीं ।
फिरै जेही दिस चंद तेही दिसि को मुख फेरै ।
चन्दा जाय छिपाय आग के भीतर हेरै ॥

---

(१) एक दीवार कहानी की जिसका होना चीन देश मे मशहूर है जिस पर चढ़ कर दूसरी ओर झाँकने से परिस्तान दीख पड़ता है और ऐसा हर्ष होता है कि हँसो के मारे देखनेवाला बेइख्तियार होकर उधर कूद कर गायब हो जाता है। (२) शांति। (३) अंतर मे।

मधुकर तजै न पदम जान से जाइ बँधावै[1]।
दीपक में ज्योँ पतंग प्रेम से प्रान गँवावै॥
पलटू ऐसी प्रीत कर परधन चाहै चोर।
आठ पहर निरखत रहै जैसे चन्द चकोर॥

(६३)

अम्मा मेरा दिल लगा मुझ से रहा न जाय॥
मुझसे रहा न जाय बिना साहिब को देखे।
जान तसद्दुक[2] करौँ लगै साहिब के लेखे॥
मुझ को भया है रोग जायगा जीव हमारा।
एकर दारू यही मिलै जो प्रीतम प्यारा॥
पड़ा प्रेम जंजाल जिकिर[3] सीने में लागी।
मैं गिरि परी बेहोस लोक की लज्जा भागी॥
पलटू सतगुरु बैद बिन कौन सकै समझाय।
अम्मा मेरा दिल लगा मुझ से रहा न जाय॥

(६४)

सीस उतारै हाथ से सहज आसिकी नाहिँ॥
सहज आसिकी नाहिँ खाँड़ खाने को नाहीँ।
झूठ आसिकी करै मुलुक में जूती खाहीं॥
जीते जी मरि जाय करै ना तन की आसा।
आसिक को दिन रात रहै सूली पर बासा॥
मान बड़ाई खोय नींद भर नाहीँ सोना।
तिल भर रक्त न माँस नहीँ आसिक को रोना॥
पलटू बड़े बेकूफ वे आसिक होने जाहिँ।
सीस उतारै हाथ से सहज आसिकी नाहिँ॥

---

(१) रात को जब कमल सम्पुट अर्थात् बंद होने लगता है तो भवँरा जो उस पर आशक्त है उड़ कर भागता नहीं बरन उसी के भीतर बंद हो जाता है। (२) न्योछावर। (३) सुमिरन।

(६५)

भूली जग की चाल सब भई जोगिनि अलमस्त ॥
भई जोगिनि अलमस्त खबर कछु तन की नाहीं ।
खाय पियै अब कौन रहै मन भजनै माहीं ॥
ऐसी लागी नेह तुरिया से भई अतीता ।
आठ पहर गलतान जोति के घर को जीता ॥
ह्वै गइ दसा अरूढ़ ज्ञान तजि भई बिज्ञानी ।
धरती नभ जरि गई जरा है पवन औ पानी ॥
पलटू दिनकर उदय भा रजनी ह्वै गई अस्त ।
भूली जग की चाल सब भई जोगिनि अलमस्त ॥

(६६)

फनि से मनि ज्यों बीछुरै जल से बिछुरै मीन ॥
जल से बिछुरै मीन प्रान को तुरत गँवावै ।
रहै न कोटि उपाय दूध के भीतर नावै ॥
ऐसी करै जो प्रीति ताहि की प्रीति सराही ।
बिछुरे पर नर जियै प्रीति वाहू की नाहीं ॥
पटकि पटकि तन रहै बिछोहा सहा न जाई ।
नैन ओट जब भये प्रान को संग पठाई ॥
पलटू हरि से बीछुरे ये ना जीवैं तीन ।
फनि से मनि जो बीछुरे जल से बिछुरै मीन ॥

(६७)

प्रेम बान जा के लगा सो जानैगा पीर ॥
सो जानैगा पीर काह मूरख से कहिये ।
तिल भरि लगै न ज्ञान ताहि से चुप ह्वै रहिये ॥
लाख कहै समुझाय बचन मूरख नहिँ मानै ।
तासे कहा बसाय ठान जो अपनी ठानै ॥
जेहि के जगत पियार ताहि से भक्ति न आवै ।
सतसंगति से बिमुख और के सन्मुख धावै ॥

जिन कर हिया कठोर है पलटू धसै न तीर।
प्रेम बान जा के लगा सो जानैगा पीर॥

(६८)

अपने पिय की सुन्दरी लोग कहैं बौरान॥
लोग कहैं बौरान काहि की पकरौं बानी।
घर घर घोर मथान फिरौं मैं नाम दिवानी॥
घूँघट डारेउँ खोलि ज्ञान कै ढोल बजाई।
चढ़िउँ बाँस पर धाइ सहर कै बिचै गड़ाई॥
देखि देखि सब चिढ़ै लोग मैं अधिक चिढ़ावौं।
लगी गुरू से डोरि मगन ह्वै ताहि रिझावौं॥
पलटू हमरे देस की जानैं संत सुजान।
अपने पिय की सुन्दरी लोग कहैं बौरान॥

(६९)

सतगुरु सब्द के सुनत ही तन की सुधि रहि जात॥
तन की सुधि रहि जात जाय मन अंतै अटका।
बिसरी भूख पियास किया सतगुरु ने टोटका[1]॥
दतुइन करी न जाय नहीं अब जाय नहाई।
बैठा उठा न जाय फिरी अब नाम दुहाई॥
कौन बनावै भेष कौन अब टोपी देवै।
बिसरा माला तिलक कौन अब दर्पन लेवै॥
पलटू झुका है आपु को मुख से भूली बात।
सतगुरु सब्द के सुनत ही तन की सुधि रहि जात॥

(७०)

की तौ इक ठौरै रहै की दुइ में इक मरि जाय॥
दुइ में इक मरि जाय रहत है दुबिधा लागी।
सुचित नहीं दिन रात उठत बिरहा की आगी॥

---

(१) जादू।

तुम जीवो भगवान मरन है मेरो नीका।
तुम बिन जीवन धिक्क लगै कारिख को टीका॥
की तुम आवो इहाँ लेव की प्रान अपाना।
दोऊ को दुख होय हंस जोड़ी अलगाना॥
कह पलटू स्वामी सुनो चिन्ता सही न जाय।
की तौ इक ठौरे रहै की दुइ में इक मरि जाय॥

(७१)

यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहिँ॥
खाला का घर नाहिँ सीस जब धरै उतारी।
हाथ पाँव कटि जाय करै ना संत करारी[1]॥
ज्योँ ज्योँ लागै घाव तेहूँ तेहुँ कदम चलावै।
सूरा रन पर जाय बहुरि ना जियता आवै॥
पलटू ऐसे घर महैँ बड़े मरद जे जाहिँ।
यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहिँ॥

(७२)

आसिक का घर दूर है पहुँचै बिरला कोय॥
पहुँचै बिरला कोय होय जो पूरा जोगी।
बिंद[2] करै जो छार नाद के घर में भोगी॥
जीते जी मरि जाय मुए पर फिर उठ जागै।
ऐसा जो कोइ होइ सोई इन बातन लागै॥
पुरजे पुरजे उड़ै अन्न बिनु बस्तर पानी।
ऐसे पर ठहराय सोई महबूब[3] बखानी॥
पलटू आपु लुटावही काला मुँह जब होय।
आसिक का घर दूर है पहुँचै बिरला कोय॥

(७३)

जहाँ तनिक जल बीछुड़ै छोड़ि देतु है प्रान॥
छोड़ि देतु है प्रान जहाँ जल से बिलगावै।

(१) ठहराव, रोक। (२) काम को जला कर खाक कर डाले। (३) प्रीतम।

देइ दुध में डारि रहै ना प्रान गँवावै ॥
जा को वही अहार ताहि को का लै दीजै ।
रहै ना कोटि उपाय और सुख नाना कीजै ॥
यह लीजै दृष्टान्त सकै सो लेइ बिचारी ।
ऐसो करै सनेह ताहि की मैं बलिहारी ॥
पलटू ऐसी प्रीति करु जल और मीन समान ।
जहाँ तनिक जल बीछुड़ै छोड़ि देतु है प्रान ॥

(७४)

जो मैं हारौं राम की जो जीतौं तौ राम ॥
जो जीतौं तौ राम राम से तन मन लावौं ।
खेलौं ऐसो खेल लोक की लाज बहावौं ॥
पासा फेंकौं ज्ञान नरद बिश्वास चलावौं ।
चौरासी घर फिरै अड़ी पौबारह नावौं ॥
पौबारह सिरवाय एक घर भीतर राखौं ।
कच्ची मारौं पाँच रैनि दिन सत्रह भाखौं ॥
पलटू बाजी लाइहौं दोऊ बिधि से राम ।
जो मैं हारौं राम की जो जीतौं तौ राम ॥

॥ बिश्वास ॥

(७५)

लगन महूरत झूठ सब और बिगाड़ै काम ॥
और बिगाड़ै काम साइत जनि सोधै कोई ।
एक भरोसा नाहिं कुसल कहवाँ से होई ॥
जेकरे हाथे कुसल ताहि को दिया बिसारी ।
आपन इक चतुराई बीच में करै अनारी ॥
तिनका टूटे नाहिं बिना सतगुरु की दाया ।
अजहूँ चेत गँवार जगत है झूठी काया ॥
पलटू सुभ दिन सुभ घड़ी याद पड़ै जब नाम ।
लगन महूरत झूठ सब और बिगाड़ै काम ॥

(८१)

पारस के परसंग से लोहा महँग बिकान ॥
लोहा महँग बिकान छुए से कीमत निकरी।
चंदन के परसंग चंदन भई बन की लकरी ॥
जैसे तिल का तेल फूल सँग महँग बिकाई।
सतसंगति में पड़ा संग भा सदन कसाई ॥
गंग में है सुभगंग मिली जो नारा सोती।
सीप बीच जो पड़ै बूँद सो होवै मोती ॥
पलटू हरि के नाम से गनिका चढ़ी बिमान।
पारस के परसंग से लोहा महँग बिकान ॥

(८२)

फिर फिर नहीं दिवारी दियना लीजै बार ॥
दियना लीजै बार महल में ह्वै उँजियारा।
उदय होय ससि भान अमावस मिटै अँधियारा ॥
ज्ञान होय परगास कुमति जूआ में हारै।
दुतिया[1] खंडन करै एक को बैठि बिचारै ॥
रचि रचि तीसो सखी अभूषन प्रेम बनाई।
गोबरधन मन पूजि बहुरि सब घर को आई ॥
पलटू सतसंगत मिला खेलि लेहु दिन चार।
फिर फिर नहीं दिवारी दियना लीजै बार ॥

(८३)

जंगल जंगल में फिरैं घर में रहै सिकार ॥
घर में रहै सिकार भेद ना कोउ बतावै।
गया अहेरी भूलि कहाँ से सावज[2] पावै ॥
खोजा चारिउ खूँट कहीं कुछ नजर न आवै।
कतहूँ ना सुधि आइ नहीं कोउ भेद बतावै ॥

---

(१) द्वैत भाव। (२) शिकार।

जप तप तीरथ बरत किया बहु नेम अचारा।
खोजा बेद पुरान सबै सतसंग पुकारा॥
सतगुरु किया इसारा पलटू लीन्हा मार।
जंगल जंगल में फिरैं घर में रहै सिकार॥

(८४)

बिन खाये चित चैन नहिँ खाये आलस होय॥
खाये आलस होय कहो कैसी बिधि कीजै।
दोऊ बिधि से बिपति दोस का को हम दीजै॥
मन बैरी है बड़ा कहे में अपने नाहीं।
पुन्न में करता पाप पाप में पुन्न कराही॥
सुभ असुभ के बीच पड़ा है जीव बिचारा।
दोऊ में बह मिला बात सब वही बिगारा॥
पलटू सतसंगत दोऊ छुटै करै जो कोय।
बिन खाये चित चैन नहिँ खाये आलस होय॥

(८५)

जो जो गा सतसंग में सो सो बिगरा[१] जाय॥
सो सो बिगरा जाय फूल सँग तेल बसाना।
ज्ञानी के सँग परा ज्ञान मूरख ने जाना॥
पारस के परसंग बिगरि गा लोहा जाई।
लोहा से भा कनक आपनी जाति गँवाई॥
सलिता गइ है बिगरि मिली गंगा में जाई।
मलया के परसंग काठ चन्दन कहवाई॥
पलटू काग से हंस भा और काग पछिताइ।
जो जो गा सतसंग में सो सो बिगरा जाइ॥

(८६)

पलटू मेरी बनि परी मुद्दा[२] हुआ तमाम॥

(१) इस कुंडलिया में बिगड़ने का शब्द व्यंग से सुधरने के अर्थ में कहा है। (२) मतलब का काम।

मुद्दा हुआ तमाम परे सतसंगति माहीँ ।
निस दिन तौलै पूर घाट[१] अब सुपनेहु नाहीँ ॥
पूँजी पाई साच दिनोँ दिन होती बढ़ती ।
सतगुरु के परताप भई है दौलत चढ़ती ॥
कोठी दसवेँ द्वार[२] सहज की खेप चलावो ।
कोई न टोकनहार नफा घर बैठे पावो ॥
दूनोँ पाँव पसारि कै निस करो अराम ।
पलटू मेरी बनि परी मुद्दा हुआ तमाम ॥

(सतसंग अनधिकारी को)

(८७)

सतगुरु सब को देत हैं लेता नाहीँ कोय ॥
लेता नाहीँ कोय सीस को धरै उतारी ।
वही सकस[३] को मिलै मरै की करै तयारी ॥
कड़ू बहुत सतनाम देखत कै डेरै सरीरा ।
रोटी खावनहार खायगा क्योँकर हीरा ॥
अंधा होवै नीक बैद का पथ जो खावै ।
मलयागिर की बास बाँस में नहीँ समावै ॥
पलटू पारस क्या करै जो लोहा खोटा होय ।
सतगुरु सब को देत हैं लेता नाहीँ कोय ॥

॥ शब्द ॥

(८८)

सबद छुड़ावै राज को सबदै करै फकीर ॥
सबदै करै फकीर सबद फिर राम मिलावै ।
जिन के लागा सबद तिन्हैं कछु और न भावै ॥
मरे सबद की घाव उन्हैं को सकै जियाई ।
होइ गा उनका काम परी रोवै दुनियाई ॥
घायल भा वह फिरै सबद कै चोट है भारी ।

(१) कसी । (२) सून्य । (३) आदमी ।

जियतै मिरतक होय झुकै फिर उठै सँभारी ॥
पलटू जिन के सबद का लगा कलेजे तीर ।
सबद छुड़ावै राज को सबदै करै फकीर ॥

(८९)

सुरत सब्द के मिलन में मुझ को भया अनंद ॥
मुझ को भया अनंद मिला पानी में पानी ।
दोऊ से भा सूत नहीं मिलि कै अलगानी ॥
मुलुक भया सलतन्त[1] मिला हाकिम को राजा ।
रैयत करै अराम खोलि के दस दरवाजा[2] ॥
छूटी सकल बियाधि मिटी इंद्रिन की दुतिया ।
को अब करै उपाधि चोर से मिलि गइ कुतिया ॥
पलटू सतगुरु साहिब काटी मेरी बंद ।
सुरत सब्द के मिलन में मुझ को भया अनंद ॥

(९०)

जोग जुगत आसन नहीं साधन नहीं बिबेक ॥
साधन नहीं बिबेक साधन सब कै कै छूटा ।
लागी सहज समाधि सब्द ब्रह्मांड में फूटा ॥
खंडन तनिक न होय तेलवत[3] लागी धारा ।
जोति निरन्तर बरै दसो दिसि भा उजियारा ।
ज्ञान ध्यान सब छूटि छूटि संजम चतुराई ।
तन की सुधि गइ बिसरि अरूढ़[4] अवस्था आई ॥
पलटू मैं भजनै भया रही न दूजी रेख ।
जोग जुगत आसन नहीं साधन नहीं बिबेक ॥

॥ ध्यान ॥

(९१)

कमठ दृष्टि जो लावई सो ध्यानी परमान ॥
सो ध्यानी परमान सुरति से अंडा सेवै ।

---

(१) अमन । (२) दसवाँ द्वार संतों का जो ओंकार पद के परे है। (३) तेल समान (४) ऊँची ।

आप रहै जल माहिँ सूखे में अंडा देवै ॥
जस पनिहारी कलस भरे मारग में आवै ।
कर छोड़े मुख बचन चित्त कलसा में लावै ॥
फनि मनि धरै उतारि आपु चरने को जावै ।
वह गाफिल ना परै सुरति मनि माहिँ रहावै ॥
पलटू सब कारज करै सुरति रहै अलगान ।
कमठ दृष्टि जो लावई सो ध्यानी परमान ॥

(९२)

जैसे कामिनि के बिषय कामी लावै ध्यान ॥
कामी लावै ध्यान रैन दिन चित्त न टारै ।
तन मन धन मर्जाद मामिनि के ऊपर वारै ॥
लाख कोऊ जो कहै कहा ना तनिकौ मानै ।
बिन देखे ना रहै वाहि को सर्बस जानै ॥
लेय वाहि को नाम वाहि की करै बड़ाई ।
तनिक बिसारै नाहिँ कनक ज्यों किरपिन[1] पाई ॥
ऐसी प्रीति अब दीजिये पलटू को भगवान ।
जैसे कामिनि के बिषय कामी लावै ध्यान ॥

॥ घट मठ ॥

(९३)

साहिब साहिब क्या करै साहिब तेरे पास ॥
साहिब तेरे पास याद करु होवै हाजिर ।
अंदर धसि के देखु मिलेगा साहिब नादिर ॥
मान मनी हो फना[2] नूर तब नजर में आवै ।
बुरका[3] डारै टारि खुदा बाखुद[4] दिखरावै ॥
रूह करै मेराज[5] कुफर का खोलि कुलाबा[6] ।
तीसौ रोजा रहै अंदर में सात रिकाबा[7] ॥

(१) कजूस। (२) नष्ट। (३) घूँघट । (४) अपने में । (५) चढ़ाई। (६) जंजीर। (७) पद, स्थान।

लामकान में रब्ब को पावै पलटूदास ।
साहिब साहिब क्या करै साहिब तेरे पास ॥

(९४)

दिल में आवै है नजर उस मालिक का नूर ॥
उस मालिक का नूर कहाँ को ढूँढ़न जावै ।
सब में पूर समान दरस घर बैठे पावै ॥
धरती नभ जल पवन तेही का सकल पसारा ।
छुटै भरम की गाँठि सकल घट ठाकुरद्वारा ॥
तिल भरि नाहीं कहीं जहाँ नहिँ सिरजनहारा ।
वोही आवै नजर फुरा[1] बिस्वास हमारा ॥
पलटू नेरे साच के झूठे से है दूर ।
दिल में आवै है नजर उस मालिक का नूर ॥

(९५)

खोजत खोजत मरि गये घर ही लागा रंग ॥
घर ही लागा रंग कीन्ह जब संतन दाया ।
मन मे भा बिस्वास छूटि गइ सहजै माया ॥
बस्तु जो रही हिरान ताहि का लगा ठिकाना ।
अब चित चलै न इत उत आपु में आपु समाना ॥
उठती लहर तरंग हृदय में सीतल लागे ।
भरम गई है सोय बैठि कै चेतन जागे ॥
पलटू खातिर जमा भइ सतगुरु के परसंग ।
खोजत खोजत मरि गये घर ही लागा रंग ॥

(९६)

नजर मँहै सब की पड़ै कोऊ देखै नाहिँ ॥
कोऊ देखै नाहिँ सीस पै सब के छाजै ।

(१) सच्चा ।

पूरन ब्रह्म अखंड सकल घट आपु बिराजै ॥
दिवसे फिरै भुलान रहै तिरगुन महँ माता ।
देखि देखि दै छाड़ि पंडित पहँ[1] पूजन जाता ॥
भूला सब संसार भेद नहिँ जानै वा की ।
देखत है इक संत ज्ञान की दीठी[2] जाकी ॥
पलटू खाली कहूँ नहिँ परगट है जग माहिँ ।
नजर मँहै सब की पड़ै कोऊ देखै नाहिँ ॥

॥ दास ॥

(६७)

पहिले दासातन करै सो बैराग प्रमान[3] ॥
सो बैराग प्रमान सेवा साधुन की कीजै ।
तब छोड़ै संसार बूझ घरही में लीजै ॥
काढ़ै रस रस गोड़[4] कछुक दिन फिरै उदासी ।
सतगुरु उहवाँ बसैँ जहाँ काया की कासी ॥
आसन से दृढ़ होय घटावै नींद अहारा ।
काम क्रोध को मारि तत्व का करै बिचारा ॥
भक्ति जोग के पीछे पलटू उपजै ज्ञान ।
पहिले दासातन करै सो बैराग प्रमान ॥

(६८)

का जानी केहि औसर साहिब ताकै मोर ॥
साहिब ताकै मोर मिहर की नजरि निहारै ।
तुरत पदम-पद देइ औगुन को नाहिँ बिचारै ॥
राम गरीबनिवाज गरीबन सदा निवाजा ।
भक्त- बछल[5] भगवान करत भक्तन के काजा ॥
गाफिल नाहीँ परै साच ह्वै लौ जब लावै ।
परा रहै वहि द्वार धनी के धक्का खावै ॥

---

(१) पास। (२) दृष्टि, निगाह। (३) मानने योग्य। (४) धीरे धीरे क़द घटावै। [५] भक्त वत्सल = भक्त को प्यार करने वाला।

आठ पहर चौंसठ घरी पलटू परै न भोर[1] ।
का जानी केहि औसर साहिब ताकै मोर ॥

(९९)

खामिँद कब गोहरावै चाकर रहै हजूर ॥
चाकर रहै हजूर होइ ना निमक-हरामी ।
डेरत रहै दिन राति लगै ना कबहीँ खामी[2] ॥
आठ पहर रहै ठाढ़ सोई है चाकर पूरा ।
का जानी केहि घरी हरी दै देइ अजूरा[3] ॥
निवाले रोह बरोह सलाम में रहता चोटा[4] ।
वह काफ़िर बेपीर खायगा आखिर सोटा ॥
पलटू पलक न भूलिये इतना काम जरूर ।
खामिँद कब गोहरावै चाकर रहै हजूर ॥

॥ सूरमा ॥

(१००)

संत चढ़े मैदान पर तरकस बाँधे ज्ञान ॥
तरकस बाँधे ज्ञान मोह दल मारि हटाई ।
मारि पाँच पच्चीस दिहा गढ़ आगि लगाई ॥
काम क्रोध को मारि कैद में मन को कीन्हा ।
नव दरवाजे छोड़ि सुरत दसएँ पर दीन्हा ॥
अनहद बाजे तूर अटल सिंहासन पाया ।
जीव भया संतोष आय गुरु नाम लखाया ॥
पलटू कफ्फन बाँधि कै खेंचो सुरति कमान ।
संत चढ़े मैदान पर तरकस बाँधे ज्ञान ॥

(१०१)

बाना बाँधै लड़ि मरै संत सिपाहि क पूत ॥
संत सिपाहि क पूत इसिम[5] में दाग न लागै ।

---

(१) भूल । (२) कचाई, चूक । (३) मिहनताना, इनाम । (४) खाना (निवाला) मिलने के वक्त तो हाजिर (रोह ब रोह = रूबरू) और सलाम यानी काम के वक्त गायब (चोटा = चोर) । (५) नाम ।

महा मोह दल टारि बहुरि ना पानी माँगै ॥
मारै पाँच पचीस बचै ना तिरगुन पावै ।
लालच का सिर काटि मुलुक में अदल चलावै ॥
तृस्ना और हङ्कार माया की गर्दन मारै ।
मन को लेवै पकरि कैद करि बेरी डारै ॥
पलटू टरै न खेत से सोई है अवधूत[१] ।
बाना बाँधे लड़ि मरै संत सिपाही क पूत ॥

(१०२)

काया कोट छुड़ावै सोई है रजपूत ॥
सोई है रजपूत देइ गढ़ आगि लगाई ।
मुरचा पाँच पचीस बात में लेइ छुड़ाई ॥
काया गढ़ के बीच जाय के थाना करना ।
मन है बड़ा मवास[२] पकरि के ठौरै मरना ॥
काम क्रोध को मारि लोभ औ मोह हंकारा ।
लालच का सिर काटि बहै लोहू की धारा ॥
पलटू अठएँ लोक में अमल करै अवधूत ।
काया कोट छुड़ावै सोई है रजपूत ॥

(१०३)

संत चढ़े जो मोह[३] पर काया नगर मँझार ॥
काया नगर मँझार ज्ञान का तरकस बाँधे ।
दम की गोली साधि बिस्वास बंदूक है काँधे ॥
घोड़ा है संतोष छिमा का जीन बँधाई ।
बखतर पहिरे प्रेम गगन में लै दौड़ाई ॥
मुरचा पाँच पचीस बात में लिहा छुड़ाई ।
मन के बेरी[४] डारि नगर में अदल चलाई ॥

(१) मस्त फ़कीर । (२) ठग । (३) मोह दल पर चढाई की । (४) बेड़ी ।

पलटू सुरति कमान करि नाम निसाना मार।
संत चढ़े जो मोह पर काया नगर मँझार॥

(१०४)

लागी गोली नाम की पलटू गया है लोट॥
पलटू गया है लोट चोट सब्दन की लागी।
रंजक दै कै ज्ञान दिया संतन ने दागी॥
लोथ परी भहराय उठत हैं गिद्ध मसाना।
भागे कादर[1] देखि खेत सूरा ठहराना॥
मारै भरि भरि भेद छेद भा तन में तिल तिल।
कड़खा[2] दै ललकार खाल गिरि परी है छिल छिल॥
सतगुरु के मैदान में रही न तनिकौ ओट।
लागी गोली नाम की पलटू गया है लोट॥

(१०५)

लागी गाँसी सबद की पलटू मुआ तुरंत॥
पलटू मुआ तुरंत खेत के ऊपर जाई।
सिर पहिले उड़ि गया रुंड[3] से करै लड़ाई॥
तन में तिल तिल घाव परदा खुलि लटकत जाई[4]।
हैफ़[5] खाइ सब लोग लड़ै यह कठिन लड़ाई॥
सतगुरु मारा तीर बीच छाती में मेरी।
तीर चला होइ पवन निकरि गा तारू फोरी॥
कहनेवाले बहुत हैं कथनी कथैं बेअंत।
लागी गाँसी सबद की पलटू मुआ तुरंत॥

(१०६)

जियतै मरना भला है नाहिँ भला बैराग॥
नाहिँ भला बैराग अस्त्र बिन करै लड़ाई।
आठ पहर की मार चूके से ठौर न पाई॥

(१) कायर। (२) शूरता की महिमा के शब्द। (३) धड़। (४) आँतै निकल कर लटक रही हैं। (५) अफ़सोस या अचरज करै।

इक टक लेवै ताकि सोई है पिय की प्यारी ॥
ताके नैन मिरारि नहीँ चित अँते टारै ।
बिन ताके केहि काम लाख कोउ नैन सँवारै ॥
ताके मेँ है फेर फेर काजर मेँ नाहीँ ।
'गि[१] मिली जो नाहिँ नफा क्या जोग के माहीँ ॥
पलटू सनकारत[२] रहा पिय को खिन खिन माहिँ ।
काजर दिहे से का भया ताकन को ढब नाहिँ ॥

(११२)

जाकी जैसी भावना तासे तस ब्यौहार ॥
तासे तस ब्यौहार परसपर दूनौँ तारी[३] ।
जो जेहि लाइक होय सोई तस ज्ञान बिचारी ॥
जो कोइ डारै फूल ताहि को फूल तयारी ।
जो कोइ गारी देत ताहि को हाजिर गारी ॥
जो कोइ अस्तुति करै आपनी अस्तुति पावै ।
जो कोइ निन्दा करै ताहि के आगे आवै ॥
पलटू जस मैँ पीव का वैसे पीव हमार ।
जाकी जैसी भावना तासे तस ब्यौहार ॥

(११३)

टेढ़ सोझ मुँह आपना ऐना टेढ़ा नाहिँ ॥
ऐना टेढ़ा नाहिँ टेढ़ को टेढ़ै सूझै ।
जो कोइ देखै सोझ ताहि को सोझै बूझै ॥
जाको कुछ नहिँ भेद भावना अपनी दरसै ।
जाको जैसी प्रीति सुरति सो तैसी परसै ॥
दुर्जन के दुर्बुद्धि पाप से अपने जरते ।
सज्जन के है सुमति सुमति से अपने तरते ॥

(१) युक्ति। (२) इशारा करना। (३) दोनों ताली या हथेली साथ बजती हैं

पलटू ऐना संत हैं सब देखै तेहि माहिँ।
टेढ़ सोझ मुँह आपना ऐसा टेढ़ा नाहिँ॥

(११४)

फूली है यह केतकी भौंरा लीजै बास॥
भौंरा लीजै बास जन्म मानुष को पाया।
करी न गुरु की भक्ति जक्त में आइ भुलाया॥
भौंरा कीजै चेत कहा तू फिरै भुलाना।
हरि को नाम सुगन्ध छोड़ि पाड़र[1] लिपटाना॥
ऋतु बसंत की जात कली को रस लै लीजै।
बहुरि न ऐसो दाँव चेत चित भौंरा कीजै॥
पलटू कबहूँ ना मरै होय न जिव का नास।
फूली है यह केतकी भौंरा लीजै बास॥

(११५)

गुरु की भक्ति और माया ज्यों छूरी तरबूज॥
ज्यों छूरी तरबूज कुसल दोऊ बिधि नाहीँ।
गिरे गिराये घाव लगे तरबूजे माहीँ॥
कनक कामिनी बड़ी दोऊ है तीछन[2] धारा।
तब बचिहै तरबूज रहै छूरी से न्यारा॥
छोट बड़ा कतलाम नहीँ छूरी को दाया[3]।
बचे बिबेकी संत गये जिन अंग लगाया॥
पलटू उन से बैर है पड़ै न मूरख बूझ।
गुरु की भक्ति और माया ज्यों छूरी तरबूज॥

(११६)

पलटू जो सिर ना नवै बिहतर कद्दू होय॥
बिहतर कद्दू होय संत से नइ[4] कै चलिये।

(१) एक बेसुगंध का फूल। (२) तेज़। (३) छूरी निर्दईपने से सब छोटे बड़े क़तल या खून करती है। (४) झुक कर।

जुरै सो आगे धरै गोड़ धै सेवा करिये ॥
आपन जीवन जनम सुफल कै वह दिन जानै ।
देखत नैन जुड़ाय सीतलता मन में आनै ॥
अंतर नाहीं करै मन बच[१] से लावै सेवा ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस संत हैं तीनों देवा ॥
सीस नवावै संत को सीस बखानौ सोइ ।
पलटू जो सिर ना नवै बिहतर कद्दू होय ॥

(११७)

राम कृस्न परसराम ने मरना किया कबूल ॥
मरना किया कबूल मरै से बचै न कोई ।
दसचौदह[२] औतार काल के बसि में होई ॥
सुर नर मुनि सब देव मुए सब मौत अपानी ।
देव पितर ससि भानु पवन नभ धरती पानी ॥
राजा रंक फकीर सूर औ बीर करारी ।
साधु सती औ अगिन मुए जिन सब को जारी ॥
पलटू आगे मरि रहौ आखिर मरना मूल ।
राम कृस्न परसराम ने मरना किया कबूल ॥

(११८)

समुझावै सो भी मरै पलटू को पछिताय ॥
पलटू को पछिताय दिना दस सबै मुसाफिर ।
हिलि मिलि रहैं सराय भोर भये पंथ पड़ा सिर ॥
इक आवै इक जाय रहै ना पैंड़ा खाली ।
इक ओर काटी जाय दूसरा लावै माली ॥
बूढ़ा बारा ज्वान नहीं है कोई इस्थिर ।
सबै बटाऊ लोग काहे को पचिये मरि मरि ॥
मरने वाला मरि गया रोवै सो मरि जाय ।
समुझावै सो भी मरै पलटू को पछिताय ॥

---

(१) वचन । (२) औतारों की संख्या चौबीस है ।

(११९)

तुझे पराई क्या परी अपनी ओर निबेर ॥
अपनी ओर निबेर छोड़ि गुड़ बिष को खावै ।
कूवाँ में तू परै और को राह बतावै ॥
औरन को उँजियार मसालची जाइ अँधेरे ।
त्यों ज्ञानी की बात मया से रहते घेरे[1] ॥
बेचत फिरै कपूर आप तो खारी खावै ।
घर में लागी आग दौरि के घूर बुतावै ॥
पलटू यह साची कहै अपने मन का फेर ।
तुझे पराई क्या परी अपनी ओर निबेर ॥

(१२०)

बहता पानी जात है धोउ सिताबी[2] हाथ ॥
धोउ सिताबी हाथ करौ कछु नीकी करनी ।
बीस - सात[3] है नरक मिली अठएँ[3] बैतरनी ॥
तोहि से परिहि सो बयरा[4] जम धिकवै भाथी ।
स्वारथ के सब लोग औसर के कोऊ न साथी ॥
आगे बूझि बिचारि करौ डेर वहि दिन केरी ।
संत सभा में बैठु परै नहिं जम की बेरी[5] ॥
पलटू हरि जस गाइले येही तुम्हरे साथ ।
बहता पानी जात है धोउ सिताबी हाथ ॥

(१२१)

जिन जिन पाया बस्तु को तिन तिन चले छिपाय ॥
तिन तिन चले छिपाय प्रगट में होय हरक्कत ।
भीड़ भाड़ से डेरै भीड़ में नहीं बरक्कत ॥
धनी भयो जब आप मिली हीरा की खानी ।

---

(१) माया में डूबा है और मुँह से ज्ञान कथता है। (२) जल्द। (३) नर्कों की सख्या त्ताईस लिखी है और अट्ठाईसवीं बैतरनी नदी है जिस को पित्र लोक में पहुँचने के लेए जीव को पार करना पड़ता है। (४) बैर, बिगाड़। (५) बेड़ी।

ठग है सब संसार जुगत से चलै अपानी॥
जो ह्वै रहते गुप्त सदा वह मुक्ति में रहते।
उन पर आवे खेद प्रगट जो सब से कहते॥
पलटू कहिये उसी से जो तन मन दे ले जाय।
जिन जिन पाया बस्तु को तिन तिन चले छिपाय॥

(१२२)

बीज बासना को जरै तब छूटै संसार॥
तब छूटै संसार जगत से प्रीति न कीजै।
लोभ मोह को जारि सत्य पद मारग लीजै॥
मारै भूख पियास जगत की करै न आसा।
काम क्रोध को जारि तजै सब भोग बिलासा॥
सदा रहै निर्वृत्त[१] चित्त ना अंतै जावै।
मन को लेवै फेरि भजन में जाय लगावै॥
पलटू हिरन के कारने जड़भर्त लिया अवतार[२]।
बीज बासना को जरै तब छूटै संसार॥

(१२३)

तो कहँ कोऊ कछु कहै कीजै अपनो काम।
कीजै अपनो काम जगत को भूकन दीजै॥
जाति बरन कुल खोय संतन को मारग लीजै।
लोक बेद दे छोड़ि करै कोउ कितनौ हाँसी।
पाप पुन्न दोउ तजौ यही दोउ गर की फाँसी॥
करम न करिहौ एक भरम कोउ लाख दिखावै।
टरै न तेरी टेक कोटि ब्रह्मा समुझावै॥
पलटू तनिक न छोड़िहौ जिउ के संगै नाम।
तो कहँ कोऊ कछु कहै कीजै अपनो काम॥

---

(१) निष्काम। (२) जड़ भरत राजा भरत को कहते हैं जिन्होंने राज-पाट छोड़ कर वन में भगवत आराधन के लिये वास किया। एक हिरन से इनकी ऐसी गहरी प्रीत हो गई थी कि उसी के वियोग में प्रान त्याग किया और उस बासना के कारन हिरन का चोला पाया।

(१२४)

इहाँ उहाँ कुछ है नहीं अपने मन का फेर ॥
अपने मन का फेर सक्ति सिव दूसर नाहीं ।
माया से है अंत[1] तेहि से बीचे माहीं ॥
जब मैं इहवाँ रहा सोच उहवाँ की भारी ।
उहवाँ देखा जाय कुदरत कुल रही हमारी ॥
जोग किये का होय भंगि[2] जो आवै नाहीं ।
केतिक कोटिन जोग रहत हैं भँगै[2] माहीं ॥
पलटू पावै सहज में सतगुरु की है देर ।
इहाँ उहाँ कुछ है नहीं अपने मन का फेर ॥

(१२५)

मन की मौज से मौज है और मौज किहि काम ॥
और मौज किहि काम मौज जो ऐसी आवै ।
आठौ पहर अनन्द भजन में दिवस बितावै ॥
ज्ञान समुद्र के बीच उठत है लहर तरंगा ।
तिरबेनी के तीर सरसुती जमुना गंगा ॥
संत सभा के मध्य सब्द की फड़[3] जब लागै ।
पुलकि पुलकि गलतान[4] प्रेम में मन को पागै ॥
पलटू रहै बिबेक से छूटै नहिं सतनाम ।
मन की मौज से मौज है और मौज किहि काम ॥

(१२६)

जो साहिब का लाल है सो पावैगा लाल[5] ॥
सो पावैगा लाल जाइ के गोता मारै ।
मरजीवा ह्वै जाय लाल को तुरत निकारै ॥

---

(१) अलग। (२) युक्ति। (३) फड़=बाज़ार—दूसरी लिपि में "झड़" है। (४) मतवाला। (५) पहिले "लाल" के अर्थ बालक या पुत्र के हैं और दूसरे लाल के अर्थ जवाहिर के हैं।

निसि दिन मारै मौज मिली अब बस्तु अपानी।
ऋद्धि सिद्धि औ मुक्ति भरत हैं उन घर पानी॥
वे साहन के साह उन्हैं है आस न दूजा।
ब्रह्मा बिस्नु महेस करैं सब उनकी पूजा॥
पलटू गुरु भक्ती बिना भेष भया कंगाल।
जो साहिब का लाल है सो पावैगा लाल॥

(१२७)

जीव जाय तो जाय दे जन्म जाय बरु नष्ट॥
जन्म जाय बरु नष्ट लोक की तजो बड़ाई।
दुख नाना सहि रहो पड़ौ दरबार में जाई॥
मात पिता निज बंधु तजौ भगनी सुत नारी।
तजि दो भोग बिलास सहत रहौ सब की गारी॥
नाचौ घूँघट खोलि ज्ञान का ढोल बजाओ।
देखै सब संसार कलाएँ उलटी खाओ॥
पलटू नाम न छोड़िहो सहि लो इतना कष्ट।
जीव जाय तो जाय दे जन्म जाय बरु नष्ट॥

(१२८)

खोजत हीरा को फिरै नहीं पोत को दाम॥
नहीं पोत को दाम जौहरि की गाँठ खुलावै।
बातन की बकवाद जौहरी को बिलमावै॥
लम्बी बोलत बात करै बातन की लदनी।
कौड़ी गाँठी नाहिं करत है बातैं इतनी॥
लिहा जौहरी ताड़[1] फिरा है गाहक खाली।
थैली लई समेटि दिहा गाहक को टाली॥
लोक लाज छूटै नहीं पलटू चाहै नाम।
खोजत हीरा को फिरै नहीं पोत को दाम॥

(१) जान गया।

(१२९)

मूरख को समुझाइये नाहक होइ अकाज ॥
नाहक होइ अकाज कहे से बात न बूझै।
अंधा आठौ गाँठि इलाज न पन्थ न सूझै ॥
ब्रह्मा उतरै आय कहे से ज्ञान न आवै।
अमृत दीजै ब्याल[1] नहीँ वा को बिष जावै ॥
लगै न भीतर ज्ञान ताहि से मन न मिलावै।
मारै भाल पषान धसै नहिँ उलटा आवै ॥
पलटू जो बूझै नहीँ बोलै से रहु बाज।
मूरख को समुझाइये नाहक होइ अकाज ॥

(१३०)

तीन लोक पेरा गया बिना बिचार बिबेक ॥
बिना बिचार बिबेक भये सब एकै घानी।
पीना[2] भा संसार जाठि ऊपर मर्रानी ॥
इतना दुख सब सहैं तेहू पर नाहिँ डेराते।
फिर फिर पेरे जायँ कर्म मेँ फिर लपटाते ॥
देखी देखा पड़ै आपु से आपु पेरावै।
पेरे से जो बचै ताहि को हँसी[3] लगावै ॥
पलटू मैं रोवन लगा चलता कोल्हू देख।
तीन लोक पेरा गया बिना बिचार बिबेक ॥

(१३१)

लोक लाज कुल छाड़ि कै करि लो अपना काम ॥
करि लो अपना काम सोच मोहिँ वा दिन केरी।
जेहि से कौल करार कौल से आपन हेरी ॥
कीन्हौं भक्ति करार जन्म तब मानुष पायो।

---

(१) साँप। (२) मोटा। (३) उस को पाखंडी कह कर संसार हँसता है।

मोकहँ है सो चेत गर्भ के बिच करि आयो ॥
औंधे बासन मँहै नीर जिन्ह लिया उबारी ।
तेकहँ तजि कै रहौ कुसल का होय तुम्हारी ॥
जगत हँसै तो हँसन दे पलटू हँसै न राम ।
लोक लाज कुल छाड़ि कै करि लो अपना काम ॥

(१३२)

तन मन लज्जा खोइ कै भक्ति करौ निर्धार ॥
भक्ति करौ निर्धार लोक की लाज न मानौ ।
देव पितर मुख खाक डारि इक गुरु को जानौ ॥
तजि दो कुल की रीति खोलि घूँघट को नाचौ ।
बेद पुरान मत काच काञ्चनी काछौ साचौ ॥
सुभ असुभ दोउ काटु पाँव की अपने बेरी ।
निसि दिन रहौ अनन्द कोऊ का करिहै तेरी ॥
पलटू सतगुरु चरन पर डारि देहु सिर भार ।
तन मन लज्जा खोइ कै भक्ति करौ निर्धार ॥

(१३३)

लोक लाज नहिँ मानिहौ तन मन लज्जा खोय ॥
तन मन लज्जा खोय छोड़ि कै मान बड़ाई ।
जाति बरन कुल खोय पड़ौगे सरन मेँ जाई ॥
लाख कोऊ जो हँसै जगत की लाज न मानौ ।
ज्योँ हिन्दू त्योँ तुरुक सकल घट साहिब जानौ ॥
नाचौ घूँघट खोलि ज्ञान की ढोल बजाओ ।
काटौ जम की फाँस भरम को दूर बहाओ ॥
पलटू बरिहौ[1] नाम को होनी होय सो होय ।
लोक लाज नहिँ मानिहौ तन मन लज्जा खोय ॥

(१) ब्याहो ।

(१३४)

जेहि सुमिरे गनिका तरी ता को सुमिरु गँवार ॥
ता को सुमिरु गँवार भला अपना जो चाहो ।
झूठा है संसार रैन सुपने सा जानो ॥
मात पिता सुत बन्धु झूठ इनको सब जानो ।
सतसंगति हरि भजन सत्त दुइ इनको मानो ॥
और देव सब बृथा आस इन की ना कीजे ।
सब देवन के देव हरी अन्तर भजि लीजै ॥
पलटू हरि के भजन बिन कोउ न उतरै पार ।
जेहि सुमिरे गनिका तरी ता को सुमिरु गँवार ॥

(१३५)

ज्योँ ज्योँ भीजे कामरी त्योँ त्यो गरुई होय ॥
त्योँ त्योँ गरुई होय सुने संतन की बानी ।
ठोपै ठोप अघाय ज्ञान के सागर पानी ॥
रस रस बाढ़ै प्रीति दिनों दिन लागन[1] लागी ।
लगत लगत लगि जाय भरम आपुइ से भागी ॥
रस रस चलै सो जाय गिरै जो आतुर[2] धावै ।
तिल तिल लागै रंग भंगि[3] तब सहजै आवै ॥
भक्ति पोढ़ पलटू करै धीरज धरै जो कोय ।
ज्योँ ज्योँ भीजै कामरी त्योँ त्योँ गरुई होय ॥

(१३६)

वे बोलैं मैं चुप रहौं आपुइ जाते हारि ॥
आपुइ जाते हारि कथनियाँ बाद[4] न आवैं ।
घरे मसलहत करैं बटुरि कै सौ सौ धावैं ॥
आवैं हमरे पास बैठि कै गाल बजावैं ।
उलटा पुलटा कहैं बचन बिपरीत सुनावैं ॥

(१) लगन । (२) जल्दी । (३) युक्ति । (४) बाज़ ।

मोकहँ है सो चेत गर्भ के बिच करि आयो ॥
औंधे बासन मँहै नीर जिन्ह लिया उबारी ।
तेकहँ तजि कै रहौ कुसल का होय तुम्हारी ॥
जगत हँसै तो हँसन दे पलटू हँसै न राम ।
लोक लाज कुल छाड़ि कै करि लो अपना काम ॥

(१३२)

तन मन लज्जा खोइ कै भक्ति करौ निर्धार ॥
भक्ति करौ निर्धार लोक की लाज न मानौ ।
देव पितर मुख खाक डारि इक गुरु को जानौ ॥
तजि दो कुल की रीति खोलि घूँघट को नाचौ ।
बेद पुरान मत काच काछनी काछौ साचौ ॥
सुभ असुभ दोउ काटु पाँव की अपने बेरी ।
निसि दिन रहौ अनन्द कोऊ का करिहै तेरी ॥
पलटू सतगुरु चरन पर डारि देहु सिर भार ।
तन मन लज्जा खोइ कै भक्ति करौ निर्धार ॥

(१३३)

लोक लाज नहिँ मानिहौ तन मन लज्जा खोय ॥
तन मन लज्जा खोय छोड़ि कै मान बड़ाई ।
जाति बरन कुल खोय पड़ौगे सरन में जाई ॥
लाख कोऊ जो हँसै जगत की लाज न मानौ ।
ज्यौं हिन्दू त्यौं तुरुक सकल घट साहिब जानौ ॥
नाचौ घूँघट खोलि ज्ञान की ढोल बजाओ ।
काटौ जम की फाँस भरम को दूर बहाओ ॥
पलटू बरिहौ[1] नाम को होनी होय सो होय ।
लोक लाज नहिँ मानिहौ तन मन लज्जा खोय ॥

(१) व्याहो ।

राँध परोसी चोर माल धरि गाफिल सोवै ॥
सुनहु साहु धनवंत सबै सम्पति के घाती।
नहिँ कीजै बिस्वास जागत रहिये दिन राती ॥
दिन दिन बढ़ती होय आन को चित्त न दीजै।
सब से रहिये दूर केहू को मित्र न कीजै ॥
पलटू जो ऐसे रहै द्रव्य कोऊ नहिँ लेइ।
चोर मूँसि घर पहुँचा मूरख पहरा देइ ॥

(१४०)

पलटू ऐसे दास को भरम करै संसार ॥
भरम करै संसार होइ आसन से पक्का।
भली बुरी कोउ कहै रहै सहि सब का धक्का ॥
धीरज धै संतोष रहै दृढ़ ह्वै ठहराई।
जो कछु आवै खाइ बचै सो देइ लुटाई ॥
लगै न माया मोह जगत की छोड़ै आसा।
बल तजि निरबल होय सबुर से करै दिलासा ॥
काम क्रोध को मारि कै मारै नींद अहार।
पलटू ऐसे दास को भरम करै संसार ॥

(१४१)

बूझि समुझि ले बालके पाछे तौ सिर खोलु ॥
पाछे तौ सिर खोलु बचा तुम सुनौ फकीरी।
हेलुआ जूती एक, नाहिँ आवै दिलगीरी[१] ॥
रूखा सूखा खाउ मिलै जो गम का टुकड़ा।
फीका कड़ुवा नाहिँ स्वाद सब छोड़ौ झगड़ा ॥
हक हलाल वह जानु सबर से बैठे आवै।
खाना वही हराम किसी से माँगन जावै ॥
पलटू वह घर राम का बच्चा तू जनि बोलु।
बूझि समुझि ले बालके पाछे तौ सिर खोलु ॥

(१) नापसन्द होना, दुख मानना।

बोली ठोली करैं छिमा करि चुप मैं मारौं।
भूँकि भूँकि फिर जायँ जुगत से उनको टारौं॥
पलटू हम से लड़न को आवै सब संसार।
वे बोलैं मैं चुप रहौं आपुइ जाते हारि॥

(१३७)

जौं लगि लागै हाथ ना करम न कीजे त्याग॥
करम न कीजे त्याग जक्त की बूझ बड़ाई।
ओहु ओर डारै तोरि एहर कुछ एक न पाई॥
उत कुल से वे गये नाहिँ इत मिला ठिकाना।
केहू ओर मेँ नाहिँ बीच के बीच भुलाना॥
जेहुँ जेहुँ पावै बस्तु तेहूँ तेहुँ करम को छोड़ै।
खातिर जमा को लेइ जगत से मुहड़ा मोड़ै॥
पलटू पग धरु निरख करि ता तेँ लगै न दाग।
जौं लगि लागै हाथ ना करम न कीजे त्याग॥

(१३८)

दुइ पासाही फकर[1] की इक दुनियाँ इक दीन।
इक दुनियाँ इक दीन दोऊ को राखै राजी।
सब की मिलै मुराद गैब की नौबति बाजी॥
हाथ जोरि मुहताज सिकन्दर रहते ठाढ़े।
हुकुम बजावहिँ भूप जबाँ[2] से जो कछु काढ़े॥
चलै फहम[3] की फौज दरोग[4] की कोट ढहाई।
बेदावा तहसील सबुर के तलब लगाई॥
पलटू ऐसी साहिबी साहिब रहै तबीन[5]।
दुइ पासाही फकर की इक दुनियाँ इक दीन॥

(१३९)

चोर मूँसि घर पहुँचा मूरख पहरा देइ॥
मूरख पहरा देइ भोर भये आपुइ रोवै।

(१) फक़ीरी। (२) ज़ुबान, जीभ। (३) विचार। (४) झूठ। (५) ताबेदार।

राँध परोसी चोर माल धरि गाफिल सोवै ॥
सुनहु साहु धनवंत सबै सम्पति के घाती ।
नहिँ कीजै बिस्वास जागत रहिये दिन राती ॥
दिन दिन बढ़ती होय आन को चित्त न दीजै ।
सब से रहिये दूर केहू को मित्र न कीजै ॥
पलटू जो ऐसे रहै द्रब्य कोऊ नहिँ लेइ ।
चोर मूँसि घर पहुँचा मूरख पहरा देइ ॥

(१४०)

पलटू ऐसे दास को भरम करै संसार ॥
भरम करै संसार होइ आसन से पक्का ।
भली बुरी कोउ कहै रहै सहि सब का धक्का ॥
धीरज धै संतोष रहै दृढ़ है ठहराई ।
जो कछु आवै खाइ बचै सो देइ लुटाई ॥
लगै न माया मोह जगत की छोड़ै आसा ।
बल तजि निरबल होय सबुर से करै दिलासा ॥
काम क्रोध को मारि कै मारै नींद अहार ।
पलटू ऐसे दास को भरम करै संसार ॥

(१४१)

बूझि समुझि ले बालके पाछे तौ सिर खोलु ॥
पाछे तौ सिर खोलु बचा तुम सुनो फकीरी ।
हेलुआ जूती एक, नाहिँ आवै दिलगीरी[१] ॥
रूखा सूखा खाउ मिलै जो गम का टुकड़ा ।
फीका कड़ुवा नाहिँ स्वाद सब छोड़ौ झगड़ा ॥
हक हलाल वह जानु सबर से बैठे आवै ।
खाना वही हराम किसी से माँगन जावै ॥
पलटू वह घर राम का बच्चा तू जनि बोलु ।
बूझि समुझि ले बालके पाछे तौ सिर खोलु ॥

(१) नापसन्द होना, दुख मानना ।

(१४२)

पलटू नीच से ऊँच भा नीच कहै ना कोय ॥
नीच कहै ना कोय गये जब से सरनाई ।
नारा बहि कै मिल्यो गंग में गंग कहाई ॥
पारस के परसंग लोह से कनक कहावै ।
आगि मँहै जो परै जरै आगै होइ जावै ॥
राम का घर है बड़ा सकल ऐगुन छिपि जाई ।
जैसे तिल को तेल फूल सँग बास बसाई ॥
भजन केरे परताप तें तन मन निरमल होय ।
पलटू नीच से ऊँच भा नीच कहै ना कोय ॥

(१४३)

हस्ती बिनु मारे मरै करै सिंह को संग ॥
करै सिंह को संग सिंह की रहनी रहना ।
अपनो मारा खाय नहीं मुरदा को गहना ॥
नहिँ भोजन नहिँ आस नहीँ इन्द्री की तिष्टा[1] ।
आठ सिद्धि नौ निद्धि ताहि को देखत बिष्टा[2] ॥
दुष्ट मित्र सब एक लगै ना गरमी पाला ।
अस्तुति निंदा त्यागि चलत है अपनी चाला ॥
पलटू झूठा ना टिकै जब लगि लगै न रंग ।
सस्ती बिनु मारे मरै करै सिंह को संग ॥

(१४४)

स्वाँती को जल एक है अपनी अपनी खानि ॥
अपनी अपनी खानि सीप से मोती कहियै ।
हीरा होइ हिरंज सीस गज मुक्ता लहियै ॥
केरा परै कपूर बेन[3] तें लोचन[4] ब्याला[5] ।
अहि मुख जहर समान उपल[6] तें लोह कराला ॥

(१) चाह । (२) गलीज़ । (३) बाँस । (४) बसलोचन । (५) दुष्ट—यह अहि = साँ[illegible]
शेषण है । (६) पत्थर ।

गो लोचन गो सीस मिरग मद नाभि तें जानो।
भिन्न भिन्न गुन होय नीर एकहि पहिचानो ॥
पलटू खामिँद एक है निसचै प्रेम प्रधान।
उपजै बस्तु सुभाव तें अपनी अपनी खानि ॥

(१४५)

भक्ति बीज जब बोवै निसि दिन करै बिबेक ॥
निसि दिन करै बिबेक लागि तब निकरन साखा।
डार पात बहु फूल जतन से जिन ने राखा ॥
हरि चरचा से सींचि ज्ञान कै बाँधै बेड़ा।
पहुँचै सोर पताल खात संतन कै खेड़ा[1] ॥
सोभित बृच्छ बिसाल मीठ फल लटकन लागे।
बिस्वास सोई रखवार बैठि कै पहरा जागे ॥
पलटू यहि बिधि जोगवै उपजै ज्ञान बिसेख।
भक्ति बीज जब बोवै निसि दिन करै बिबेक ॥

(१४६)

पलट सरबस दीजिये मित्र न कीजै कोय ॥
मित्र न कीजै कोय चित्त दै बैर बिसाहै[2]।
निस दिन होय बिनास और वह नाहिँ निबाहै ॥
चिन्ता बाढ़ै रोग लगा छिन छिन तन छीजै।
कम्मर[3] गरुआ होय ज्यों ज्यों पानी से भीजै ॥
जोग जुगत की हानि जहाँ चित अंतै जावै।
भक्ति आपनी जाय एक मन कहूँ लगावै ॥
राम मिताई ना चलै और मित्र जो होय।
पलटू सरबस दीजिये मित्र न कीजै कोय ॥

(१) गाँव भर। (२) मोल ले। (३) कम्मल।

(१४७)

खा[1] टूटै खा फाटै कहिये परदा खोल ॥
कहिये परदा खोल रवा ना बाकी कीजै[2] ।
बात कहै दुइ टूक मैल[3] ना पानी पीजै ॥
उन से रहिये दूर बड़े वे लोग अधरमी ।
तुरतहि देइँ जवाब बचै ना सरमा सरमी ॥
कहैं मित्र की बात करैं दुस्मन की करनी ।
ना कीजै बिस्वास करैं कैसौ ब्योहरनी ॥
पलटू छूरी कपट की बोलैं मीठे बोल ।
खा टूटै खा फाटै कहिये परदा खोल ॥

॥ ज्ञान ॥

(१४८)

परदा अंदर का टरै देखि परै तब रूप ॥
देखि परै तब रूप मिटै सब मन का धोखा ।
परै सबद टकसार बहुत चोखे से चोखा ॥
जोग-जीत जब होय भूमिका ज्ञान की पावै ।
लागै सहज समाधि सक्ति से सीव बनावै ॥
महल करै उँजियार तेल बिनु दीपक बाती ।
परमानन्द अनन्द भजन में दिन औ राती ॥
पलटू सूझै है नहीँ जहाँ अधोमुख कूप ।
परदा अंदर का टरै देखि परै तब रूप ॥

(१४९)

समुझाये से क्या भया जब ज्ञान आपु से होय ॥
ज्ञान आपु से होय हंस को कौन सिखावै ।
छीर करत है पान नीर को वह अलगावै ॥
अललपच्छ इक रहै गगन में अंडा देवै ।
बच्चा सुरति सम्हार उलटि कै फिर घर लेवै ॥

(१) चाहे (२) ज़र्रा (रवा) भर न उठाय रक्खो। (३) मैला।

केहरि के सिसु कँहे[1] कौन उपदेस बतावै।
कुंजर[2] देहि गिराइ बात में बिलँब न लावै॥
पलटू सतगुरु रहनि को परखि लेय जो कोय।
समुझाये से क्या भया जब ज्ञान आपु से होय॥

(१५०)

ज्ञान समाधि जा को मिली सो क्या लावै ध्यान॥
सो क्या लावै ध्यान ध्यान दुतिया कहवावै।
आप भया पातसाह कौन के मुजरे जावै॥
भजनी[3] से भा भजत[4] कौन अब आवै जावै।
लिहा निसाना मारि कौन अब तीर चलावै॥
मन के संकल्प भजन रूप अपनो दरसावै।
जो इहवाँ सो उहाँ संकल्प को दूरि बहावै॥
पलटू लगी सो लगि गई कौन होय हैरान।
ज्ञान समाधि जा को मिली सो क्या लावै ध्यान॥

(१५१)

समुझे को समुझावै हीरा आगे पोत॥
हीरा आगे पोत ज्ञानी को मूढ़ बुझावै।
जहवाँ आँधी चलै बेना कै बतास[5] चलावै॥
अटकर सेती अंध डिठियारे[6] राह बतावै।
जैसे पंडित चतुर संत से बाद[7] न आवै॥
सुधा के पीवनहार ताहि को छाछ दिखावै।
जेकरे बाजे तूर तहाँ का डफ्फ बजावै॥
पलटू दीपक का करै जहँ सूरज की जोत।
समुझे को समुझावै हीरा आगे पोत।

(१) शेर के बच्चे को। (२) हाथी। (३) भजन करनेवाला। (४) जिसका भजन किया जाता है। (५) पंखे की हवा। (६) आँख वाले को। (७) वाज न आवै, पीछे पड़ा रहै।

॥ करनी और रहनी ॥

(१५२)

अपनी अपनी करनी अपने अपने साथ ॥
अपने अपने साथ करै सो आगे आवै।
बाप के करनी बाप पूत के पूतै पावै ॥
जोरू के जोरुहिँ फलै खसम के खसम को फलता।
अपनी करनी सेती जीव सब पार उतरता ॥
नेकी बदी है संग और ना संगी कोई।
देखो बूझि बिचारि संग ये जैहैं दोई ॥
पलटू करनी और की नहीँ और के साथ।
अपनी अपनी करनी अपने अपने साथ ॥

(१५३)

सरबंगी जो नाम के रहनी सहित बिबेक ॥
रहनी सहित बिबेक एक करि सब को मानै।
खान पियन में जुदा नहीँ एकै में सानै ॥
लिये रहै मर्जाद तजै ना नेम अचारा।
धर्म सनातन सहित असुभ सुभ करै बिचारा ॥
बोलै सब्द अघोर भजन अद्वैता अंगी।
कारज निर्मल करै सोई पूरा सरबंगी ॥
पलटू बाहर कुल धरम भीतर राखै एक।
सरबंगी जो नाम के रहनी सहित बिबेक ॥

॥ शरण और व्रत (टेक) ॥

(१५४)

करम धरम सब छाड़ि के पड़े सरन में आय ॥
पड़े सरन में आय तजी बल बुधि चतुराई।
जप तप नेम अचार नहीँ जानौं कछु भाई ॥
पूजा ज्ञान न ध्यान तिलक नहिँ देवै जानौं।
जोग जुगत कछु नहीँ नहीँ तीरथ व्रत मानौं ॥

एक भरोसा पाय दिया सिर भार लराई[1]।
पंछी को पछ[2] गया रहा इक नाम सहाई ॥
पलटू मैं जियते मुवा नाम भरोसा पाय।
करम धरम सब छाड़ि कै पड़े सरन में आय ॥

(१५५)

पलटू सोवै मगन में साहिब चौकीदार ॥
साहिब चौकीदार मगन होइ सोवन लागे।
दूनौं पाँव पसारि देखि कै दुस्मन भागे ॥
जाके सिर पर राम ताहि को बार न बाँके।
गाफिल मैं मैं रहौं आपनी आपुइ ताकै ॥
हम को नाहीं सोच सोच सब उन को भारी।
छिन भरि परै न भोर[3] लेत है खबर हमारी ॥
लाज तजा जिन राम पर डारि दिहा सिर भार।
पलटू सोवै मगन में साहिब चौकीदार ॥

(१५६)

कोउ कितनौ चुगुली करै सुनै न बात[4] हमार ॥
सुनै न बात हमार गये जब से सरनाई।
सब ऐगुन करि माफ लिहिनि मोकँह अपनाई ॥
करत फिरौं अन्याय काम ना क्रोध बिचारा।
कैसेउ पूत कपूत पिता को आखिर प्यारा ॥
लोभी लंपट चोर कुकरमी जातिन नीचा।
अपने सरन की लाज जानि पद दीन्हेउ ऊँचा ॥
पलटू हम से राम से ऐसो भा ब्योहार।
कोउ कितनौ चुगुली करै सुनै न बात हमार ॥

(१५७)

जौन काछ कौ काछिये नाच नाचिये सोय ॥
नाच नाचिये सोय तबै तौ सोभा पावै।

(१) गिरा दिया। (२) पंख। (३) भूल। (४) शिकायत।

धरन नीबाहै और साच में दाग न लागै।
ज्यों पतिबर्ता नारि डिगै ना लाख डिगावै॥
पलटू लोह की मेख ज्यों पत्थर बीच गड़ै।
साधु को ऐसा चाहिये ज्यों सिसु अड़नि अड़ै॥

॥ विनय ॥

(१५९)

पतितपावन बाना धर्‍यो तुमहिँ परी है लाज॥
तुमहिँ परी है लाज बात यह हम ने बूझी।
जब तुम बाना धर्‍यो नाहिँ तब तुम कहँ सूझी॥
अब तो तारे बनै नहीँ तो बाना उतारौ।
फिर काहे को बड़ा बाच जो कहिकै हारौ॥
आगहिँ तुम गये चूक दोष नहिँ दीजै मेरो।
तुम यह जानत नाहिँ पतित होइहैं बहुतेरो॥

(१) हौसला। (२) तजावज़=फ़र्क़। (३) बालक।

॥ मान ॥
(१६५)

मान बड़ाई कारने पचि मूआ संसार ॥
पचि मूआ संसार जती जोगी सन्यासी ।
उनहूँ को है चाह गुफा के भीतर बासी ॥
सिद्ध सिद्धई करै पर्भुता कारन जाई ।
गोड़ धरावन हेतु महंत उपदेस चलाई ॥
राजा रंक फ़कीर फिरै जो खाक लगाये ।
सब के मन में चाह है खुसी बड़ाई पाये ॥
पलटू हरि के भक्त से गई पर्भुता हार ।
मान बड़ाई कारने पचि मूआ संसार ॥

(१६६)

खुदी खोय[1] को खोवै सोई है दुरवेस ॥
सोई है दुरवेस रूह की करै सफाई ।
दिल अंदर दीदार नबी का दरसन पाई ॥
बिन बादल बरसात अबर बिन बरसत पानी ।
गरमी आतस बिना जबाँ बिन बोलत बानी ॥
लामकान[2] बेचून[3] लाहुत[4] को दिल दौड़ावै ।
फना को करै कबूल सोई वह काबा पावै ॥
पलटू जारै फिकर को रहै जिकर[5] में पेस ।
खुदी खोय को खोवै सोई है दुरवेस ॥

(१६७)

सब कोइ पीवैं कूप जल खारी पड़ा समुन्द ॥
खारी पड़ा समुन्द बड़े सो काम के नाहीं ।
जैसे बड़ी खजूर पथिक को मिलै न छाँहीं ॥
भक्त कहावैं बड़े भेष ना खाय को पावैं ।
पूजैं नाहीं साध बड़े घर ही कहवावैं ॥

(१) आदत । (२) अनामी पद । (३) अद्वितीय । (४) सून्य । (५) सुमिरन ।

खान पियन को नाहिँ बचन करकसे सुनावैँ।
पर्बत बड़े कठोर नजर दूरहि से आवैँ॥
पलटू संपति सूम की खरचै ना इक बुंद।
सब कोई पावैं कूप जल खारी पड़ा समुन्द॥

(१६८)

बढ़ते बढ़ते बढ़ि गये जैसे बढ़ी खजूर॥
जैसे बढ़ी खजूर पथिक छाया नहिँ पावै।
ज्योँ त्योँ कै जो फिरै ताहि कैसे कोउ खावै॥
पात मेँ काँटा रहै छुवत कै लोहू आवै।
पेड़ सोऊ बेकाम कुवा को धरन बनावै॥
सम्पति मेँ बढ़ि जाय दया बिन भला भिखारी।
जातिहु मेँ बढ़ि जाय भक्ति बिन भला चमारी॥
पलटू सोभा दोऊ की दया भक्ति से पूर।
बढ़ते बढ़ते बढ़ि गये जैसे बढ़ी खजूर॥

॥ भेद ॥

(१६९)

उलटा कूवा गगन मेँ तिस मेँ जरै चिराग॥
तिस मेँ जरै चिराग बिना रोगन बिन बाती।
छः रितु बारह मास रहत जरतै दिन राती॥
सतगुरु मिला जो होय ताहि की नजर मेँ आवै।
बिन सतगुरु कोउ होय, नहिँ वा को दरसावै॥
निकसै एक अवाज चिराग की जोतिहिँ माहीँ।
ज्ञान समाधी सुनै और कोउ सुनता नाहीँ॥
पलटू जो कोई सुनै ता के पूरे भाग।
उलटा कूवा गगन मेँ तिस मेँ जरै चिराग॥

(१७०)

बंसी बाजी गगन मेँ मगन भया मन मोर॥
मगन भया मन मोर महल अठवेँ पर बैठा।

जहँ उठै सोहंगम सब्द सब्द के भीतर पैठा ॥
नाना उठैं तरंग रंग कुछ कहा न जाई ।
चाँद सुरज छिपि गये सुषमना सेज बिछाई ॥
छुटि गया तन येह नेह उनहीं से लागी ।
दसवाँ द्वारा फोड़ि जोति बाहर ह्वै जागी ॥
पलटू धारा तेल की मेलत ह्वै गया भोर ।
बंसी बाजी गगन में मगन भया मन मोर ॥

(१७१)

चढ़ै चौमहले महल पर कुंजी आवै हाथ ॥
कुंजी आवै हाथ सब्द का खोलै ताला ।
सात महल के बाद मिलै अठएँ उँजियाला ॥
बिनु कर बाजै तार नाद बिनु रसना गावै ।
महादीप इक बरै दीप में जाय समावै ॥
दिन दिन लागै रंग सफ़ाई दिल की अपने ।
रस रस मतलब करै सिताबी[1] करै न सपने ॥
पलटू मालिक तुही है कोई न दूजा साथ ।
चढ़ै चौमहले महल पर कुंजी आवै हाथ ॥

(१७२)

चाँद सुरज पानी पवन नहीं दिवस नहिं रात ॥
नहीं दिवस नहिं रात नाहिं उतपति संसारा ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस नाहिं तब किया पसारा ॥
आदि जोति बैकुंठ सुन्य नाहीं कैलासा ।
सेस कमठ दिग्पाल नाहिं धरती आकासा ॥
लोक बेद पलटू नहीं कहौं मैं तबकी बात ।
चाँद सुरज पानी पवन नहीं दिवस नहिं रात ॥

(१) जल्दी ।

(१ ३)

बिनु कागद बिनु अच्छरे बिनु मसि से लिखि देय ॥
बिनु मसि से लिखि देय सोई पंडित कहवावै ।
बिनु रसना कहै बेद अकथ की कथा सुनावै ॥
छुटी बात अस्थूल सूछम में मिला ठिकाना ।
फिर पोथी क्या पढ़ै अच्छर में आप समाना ॥
निःअच्छर अब मिला अच्छर को क्या ले करना ।
हीरा लागा हाथ पोत की कौन सरहना[1] ॥
पलटू पंडित सोई है कलम हाथ नहिँ लेय ।
बिनु कागद बिनु अच्छरे बिनु मसि से लिखि देय ॥

(१७४)

झंडा गड़ा है जाय के हद बेहद के पार ॥
हद बेहद के पार तूर जहँ अनहद बाजै ।
जगमग जोति जड़ाव सीस पर छत्र बिराजै ॥
मन बुधि चित रहे हार नहीँ कोउ वह घर पावै ।
सुरत सब्द रहै पार बीच से सब फिरि आवै ॥
बेद पुरान की गम्म सकै ना उहवाँ जाई ।
तीन लोक के पार तहाँ रोसन रोसनाई ॥
पलटू ज्ञान के परे है तकिया तहाँ हमार ।
झंडा गड़ा है जाय के हद बेहद के पार ॥

(१७५)

जागत में एक सूपना मोहिँ पड़ा है देख ॥
मोहिँ पड़ा है देख नदी इक बड़ी है गहिरी ।
ता में धारा तीन बीच सेँ सहर बिलौरी ॥
महल एक अँधियार बरै तहँ गैब की बाती ।
पुरुष एक तहँ रहै देखि छबि वा की माती ॥
पुरुष अलापै तान सुना मैं एक ठो जाई ।
वाहि तान के सुनत तान में गई समाई ॥

(१) क़दर, तारीफ़ ।

पलटू पुरुष पुरान वह रंग रूप नहिँ रेख।
जागत में एक सूपना मोहिँ पड़ा है देख॥

॥ अद्वैत ॥

(१७६)

जल से उठत तरंग है जल ही माहिँ समाय॥
जल ही माहिँ समाय सोई हरि सोई माया।
अरुझा बेद पुरान नहीँ काहू सुरझाया॥
फूल महैं ज्योँ बास काठ में आग छिपानी।
दूध महैं घिउ रहै नीर घट माहिँ लुकानी॥
जो निर्गुन सो सर्गुन और न दूजा कोई।
दूजा जो कोइ कहै ताहि को पातक होई॥
पलटू जीव और ब्रह्म से भेद नहीं अलगाय।
जल से उठत तरंग है जल ही माहिँ समाय॥

(१७७)

कोटिन जुग परलय गई हमहीँ करनेहार॥
हमहीँ करनेहार हमहिँ करता के करता।
जेकर करता नाम आदि में हम हीँ रहता॥
मरिहैं ब्रह्मा बिस्नु मृत्यु ना होय हमारी।
मरिहैं सिय[1] के लाल मरैंगी सिव की नारी॥
धरती अगिन अकास मुवा है पवन और पानी।
आदि जोति मरि गई रही देवतन की नानी॥
पलटू हम मरते नहीँ ज्ञानी लेहु बिचार।
कोटिन जुग परलय गई हम हीँ करनेहार॥

(१७८)

आदि अंत हम हीँ रहे सब में मेरो बास॥
सब में मेरो बास और ना दूजा कोई।
ब्रह्मा बिस्नु महेस रूप सब हमरै होई॥

(१) सिया नाम सीता जी का है—एक पाठ में "सिव" है।

हमहीं उतपति करैं करैं हमहीं संहारा।
घट घट में हम रहैं रहैं हम सब से न्यारा॥
पारब्रह्म भगवान अस हमरै कहवाये।
हमहीं सोहं सब्द जीति ह्वै सुन्न में आये॥
पलटू देह के धरे से वे साहिब हम दास।
आदि अंत हम हीं रहे सब में मेरो बास॥

॥ उलटावती ॥

(१७९)

गंगा पाछे को बही मछरी चढ़ी पहार॥
मछरी चढ़ी पहार चूल्ह में फन्दा लाया।
पुखरा भीटे बाँधि नीर में आग छिपाया॥
अहिरिनि फेंके जाल कुहारिन भैंसि चरावै।
तेली कै मरिगा बैल बैठि के धुबइन गावै॥
महुवा में लागा दाख[1] भाँग में भया लुबाना[2]।
साँप के बिल के बीच जाय के मूस लुकाना॥
पलटू संत बिबेकी बुझिहैं सबद सम्हार।
गंगा पाछे को बही मछरी चढ़ी पहार॥

(१८०)

खसम बिचारा मरि गया जोरू गावै तान॥
जोरू गावै तान फिरा अहिबात[3] हमारा।
झूठ सकल संसार माँग भरि सेंदुर धारा॥
हम परिबरता नारि खसम को जियतै मारी।
वा को मूड़ौं मूड़ सरबर जो करै हमारी॥
दुतिया गइ है भागि सुनो अब राँध परोसिन।
पिया मरे आराम मिला सुख मोकहँ दिन दिन॥
पलटू ऐसे पद कँहे बूझै सोइ निरबान।
खसम बिचारा मरि गया जोरू गावै तान॥

---

(१) मुनक्का। (२) एक प्रकार की गोंद जो सुगंधि के लिए जलाई जाती है। (३) सुहाग।

(१८१)

खसम मुवा तौ भल भया सिर की गई बलाय ॥
सिर की गई बलाय बहुत सुख हम ने माना ।
लागे मंगल होन बजन लागे सदियाना[1] ॥
दीपक बरै अकास महल पर सेज बिछाया ।
सूतौं महीं अकेल खबर जब मुए की पाया ॥
सूतौं पाँव पसारि भरम की डोरी टूटी ।
मने कौन अब करै खसम बिनु दुबिधा छूटी ॥
पलटू सोई सुहागिनी जियतै पिय को खाय ।
खसम मुवा तौ भल भया सिर की गई बलाय ॥

॥ मन ॥

(१८२)

मन मारे मरता नहीँ कीन्हे कोटि उपाय ॥
कीन्हे कोटि उपाय नहीँ कोइ मन की जानै ।
मन के मन में और कोई जनि मन की मानै ॥
हाड़ चाम नहिँ मास नहीँ कछु रूप न रेखा ।
कैसे लागै हाथ नहीँ कोउ मन को देखा ॥
छिन में कथै बैराग छिनै में होवै राजा ।
छिन में रोवै हँसै छिनै में आपु बिराजा ॥
पलटू पलकै भरे में लाख कोस पर जाय ।
मन मारे मरता नहीँ कीन्हे कोटि उपाय ॥

॥ माया ॥

(१८३)

माया ठगनी जग ठगा इकहै[2] ठगा न कोय ॥
इकहै ठगा न कोय लिये है तिर्गुन गाँसी ।
सुर नर मुनि देय डिगाय करै यह सब की हाँसी ॥
इंद्रहु को यह ठगा ठगा दुबासे जाई ।
नारद मुनि को ठगा चली ना कछु चतुराई ॥

(१) खुशी का बाजा । (२) इस को ।

सिवसंकर को ठगा बड़े जो नेजाधारी।
सिंगी ऋषी जवान[1] बीछ कै बन में मारी॥
पलटू इह को सो ठगा जो साचा भक्त होय।
माया ठगनी जग ठगा इकहै ठगा न कोय॥

(१८४)

माया बड़ी बहादुरी लूटि लिहा संसार॥
लूटि लिहा संसार केहू को मानै नाहीं।
तनिक उज़ुर जो करै ताहि को कच्चा खाही॥
कहूँ कनक कहुँ कामिनि सुन्दर भेष बनावै।
ताकै जेकरी ओर नजर से मारि गिरावै॥
जोगी जती औ तपी गुफा से पकरि मँगावै।
बचै न कोऊ भागि दुपहरै लूटा जावै॥
पलटू डरपै संत से वे मारैं पैजार।
माया बड़ी बहादुरी लूटि लिहा संसार॥

(१८५)

माया की चक्की चलै पीसि गया संसार॥
पीसि गया संसार बचै ना लाख बचावै।
दोऊ पट के बीच कोऊ ना साबित जावै॥
काम क्रोध मद लोभ चक्की के पीसनहारे।
तिरगुन डारैं झीक[2] पकरि कै सबै निकारे॥
दुरमति बड़ी सयानि सानि कै रोटी पोवै।
करम तवा में धारि सेँकि कै साबित होवै॥
तृस्ना बड़ी छिनारि जाइ उन सब घर घाला।
काल बड़ा बरियार किया उन एक निवाला॥
पलटू हरि के भजन बिनु कोऊ न उतरै पार।
माया की चक्की चलै पीसि गया संसार॥

(१) बहादुर। (२) मुट्ठी मुट्ठी अनाज जो चक्की में डालते हैं।

(१८६)

नागिनि पैदा करत है आपुइ नागिनि खाय ॥
आपुइ नागिनि खाय नागिनि से कोउ न बाचे ।
नेजाधारी सम्भु नागिनि के आगे नाचे ॥
सिंगी ऋषि को जाय नागिनि ने बन में खाई ।
नारद आगे पड़े लहर उनहूँ को आई ॥
सुर नर मुनि गनदेव सभन को नागिनि लीले ।
जोगी जती औ तपी नहीं काहू को ढीले[१] ॥
संत बिबेकी गरुड़ हैं पलटू देखि डेराय ।
नागिनि पैदा करत है आपुइ नागिनि खाय ॥

(१८७)

कुसल कहाँ से पाइये नागिनि के परसंग ॥
नागिनि के परसंग जीव के भच्छक सोई ।
पहरू कीजे चोर कुसल कहवाँ से होई ॥
रूई के घर बीच तहाँ पावक लै राखै ।
बालक आगे जहर राखि करिके वा चाखै ॥
कनक धार जो होय ताहि ना अंग लगावै ।
खाया चाहै खीर गाँव में सेर बसावै ॥
पलटू माया से डेरै करै भजन में भंग ।
कुसल कहाँ से पाइये नागिनि के परसंग ॥

(१८८)

पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन देखा चारिउ खूँट ॥
देखा चारिउ खूँट माया से बचै न कोई ।
राजा रंक फकीर माया के बसि में होई ॥
सब को बसि में करै जगत को माया जीती ।
आपु न बसि में होय रहै वह सब से रीती ॥
हरि को देइ भुलाय अमल वह अपना करती ।

(१) छोड़े ।

ऐसी है वह नारि खसम को नाहीँ डेरती ॥
पलटू सब संसार को माया लीन्हो लूट ।
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन देखा चारिउ खूँट ॥

(१८९)

मन माया जोड़ै नहीँ बझै आपु से जाय ॥
बझै आपु से जाय गही ज्योँ मरकट मूठी ।
ज्योँ नलनी का सुआ बात सब ऐसी झूठी ॥
छोड़ै नाहीँ आपु भरम में पड़ा गँवारा ।
खैंचि लेय जो हाथ कोऊ न पकड़नहारा ॥
जिव लै बचै तो भागु भूलि गइ सब चतुराई ।
रोवन लागे पूत काल ने पकरा आई ॥
पलटू आसा बधिक है लालच बुरी बलाय ।
मन माया छोड़ै नहीँ बझै आपु से जाय ॥

॥ अज्ञानता ॥

(१९०)

घर मेँ जिंदा छोड़ि कै मुरदा पूजन जायँ ॥
मुरदा पूजन जायँ भीति को सिरदा[१] नावैँ ।
पान फूल औ खाँड़ जाइ कै तुरत चढ़ावैँ ॥
ताल कि माटी आनि ऊँच कै बाँधिनि चौरी ।
लीपि पोति कै धरिनि पूरी औ बरा कचौरी ॥
पीयर लूगा[२] पहिरि जाइ कै बैठिनि बूढ़ा ।
भरमि भरमि अभुवाइँ माँगत हैँ खसी[३] कै मूँड़ा ॥
पलटू सब घर बाँटि कै लै लै बैठे खायँ ।
घर मेँ जिंदा छोड़ि कै मुरदा पूजन जायँ ॥

(१९१)

जियतै देइ गिरास ना मुए परावै पिंड ॥
मुए परावै पिंड कौन है खावनहारो ।

(१) सिजदा = दंडवत । (२) कपड़ा । (३) बकरा ।

राँध परोसिनि नेवति खवावै ससुरा सारो ॥
पितरन के मुँह छार धोख दै लेइ बड़ाई ।
मुए बैल को घास देहु कहु कैसे खाई ॥
अपने परुसा[1] लेइ पित्र को छोड़ै पानी ।
करै पित्र से भूत बड़ो मूरख अज्ञानी ॥
पलटू पुरषा मुक्ति में करत भंड औ भिंड ।
जियतै देइ गिरास ना मुए परावै पिंड ॥

(१६२)

पानी का को देइ प्यास से मुवा मुसाफिर ॥
मुवा मुसाफिर प्यास डोर औ लुटिया पासै ।
बैठ कुवाँ की जगत जतन बिनु कौन निकासै ॥
आगे भोजन धरा थारि में खाता नाहीं ।
भूख भूख करै सोर कौन डारै मुख माहीं ॥
दीया बाती तेल आगि है नाहिं जरावै ।
खसम सोया है पास खसम को खोजन जावै ॥
पलटू डगरा[2] सूध अटकि कै परता गिर गिर ।
पानी का को देइ प्यास से मुवा मुसाफिर ॥

(१९३)

लहँगा परिगा दाग फूहरि साबुन से धोवै ॥
फूहरि धोवै दाग छुटै ना और बढ़ावै ।
ज्यों ज्यों मलै बनाय सारे लहँगा फैलावै ॥
गाफिल में गइ सोय खसम को दोष लगावै ।
ऐसी फूहरि नारि आप को नाहिं बचावै ॥
धोबी को नहिं देइ घरहिं में आपु छुड़ावै ।
इक बेर दिहसि निखारि लाज से नाहिं दिखावै ॥
पलटू परदा खोलि आपनो घर घर रोवै ॥
लहँगा परिगा दाग फूहरि साबुन से धोवै ॥

---

(१) परोसा, पत्तल । (२) रास्ता ।

(१९४)

अँधरन केरि बजार में गया एक डिठियार ॥
गया एक डिठियार सबै अंधा उठि धाये।
अहमक आये आजु सबै मिलि तारी लाये ॥
डारौ आँखी फोरि रहौ तुम हमरी नाईं।
सब अँधरन मिलि अंध अंध वा को ठहराई ॥
जँहवाँ लाखन अंध एक क्या करै बिचारा।
सुनै न वा की कोऊ तहाँ डिठियारै हारा ॥
पलटुदास यहि बात को कोऊ न करै न बिचार।
अँधरन केरि बजार में गया एक डिठियार ॥

(१९५)

सब अँधरन के बीच एक है काना राजा ॥
काना राजा रहै ताहि कै रैयत आँधा।
काना को अगुवाइ एक इक पकरिनि काँधा ॥
बीच मिला दरियाव अंध को ठाढ़ कराई।
लेन गया वह थाह सूँसि[१] लैगा घिसियाई ॥
साँझ आइ नियरानि अंध सब करैं बिचारा।
लाग खान को करन बड़ा सरदार हमारा ॥
आधी रात के बीच सबै मिलि गौगा[२] लाई।
भेड़हा[३] बोला आय चलो इक एक बुलाई ॥
एक एक तुम चलो नाहिँ है बासन[४] दूजा।
गरदन धै लैजाय करै ताही की पूजा ॥
पलटू सब की खाय मगन है भेड़हा गाजा।
सब अँधरन के बीच एक है काना राजा ॥

॥ छप्पै ॥

(१९६)

अपकारी जिव जाहिँगे पलटू अपने आप ॥
पलटू अपने आप संत का सरल सुभाऊ।

(१) कर्म से भाव है। (२) शोर। (३) काल से भाव है। (४) बरतन।

सब को मानहिँ भला नाहिँ कछु करहिँ दुराऊ ॥
लाख दुष्ट जो होइ भला तेहू का मानैँ।
आपन ऐसा जीव संत जन सब का जानैँ ॥
अपनी करनी जाय होय जो निंदक कोई।
आन को गड़हा खनै परैगा आपुहि सोई ॥
जब देखै वह संत को तब चढ़ि आवै ताप[1]।
अपकारी जिव जाहिंगे पलटू अपने आप ॥

(१६७)

बनियाँ बानि न छोड़ै पसँघा मारे जाय ॥
पसँघा मारे जाय पूर को मरम न जानी।
निसु दिन तौलै घाटि खोय[2] यह परी पुरानी ॥
केतिक कहा पुकारि कहा नहिँ करै अनारी।
लालच से भा पतित सहै नाना दुख भारी ॥
यह मन भा निरलज्ज लाज नहिँ करै अपानी।
जिन हरि पैदा किया ताहि का मरम न जानी ॥
चौरासी फिरि आइ कै पलटू जूती खाय।
बनियाँ बानि न छोड़ै पसँघा मारे जाय ॥

(१६८)

संत रतन की कोठरी कुंजी दुष्टन हाथ ॥
कुंजी दुष्टन हाथ अटकि के खोलहिँ जाई।
संत भये परसिद्ध परभुता नाम दिखाई ॥
चकमक भये हैँ दुष्ट संत जन जैसे पथरी।
हरि की प्रभुता आगि प्रगट ह्वै वा से निकरी ॥
आगि देखि सब डेरे जगत में भय तब व्यापी।
दुष्टन के परताप बस्तु परगट भई ढाँपी ॥
पलटू परदा खुलि गया सबै नवावै माथ।
संत रतन की कोठरी कुंजी दुष्टन हाथ ॥

(१) बुखार। (२) आदत।

॥ कर्म्म भर्म्म-देई देवा ॥

(१९९)

अंजन देय न ज्ञान का अंधा भया बनाय[1] ॥
अंधा भया बनाय बैद की बात न मानै।
बिषय बयाला[2] खाय, करे संजम ना जानै ॥
लालच रोगिया करै बैद को दोस लगावै।
तनिक नहीं बिस्वास आँखि कहवाँ से पावै ॥
एक होय तो कहौं गाँव का गाँवे बिगरा।
दिवसै दीपक बारि पाप का सेते डगरा[3] ॥
पलटू सब संसार के माड़ा गया है छाय।
अंजन देय न ज्ञान का अंधा भया बनाय ॥

(२००)

जौं लगि परदा पड़ा है धोखा रहा समाय ॥
धोखा रहा समाय जानै दूजा है कोई।
भीतर बाहर एक तसल्ली[4] देखे होई ॥
जो देखा सो गया रहा जो देखा नाहीं।
चोकर लड्डू खाँड़ खाय दोऊ पछिताहीं ॥
जोई पहुँचा जाय सोई उस घर का मालिक।
रहे नाम में डूबि ठिकाने पहुँचे सालिक[5] ॥
पलटू परदा टारि दे दिल का धोखा जाय।
जौं लगि परदा पड़ा है धोखा रहा समाय ॥

(२०१)

बस्तु धरी है पाछे आगे लिहिनि तकाय[6] ॥
आगे लिहिनि तकाय पाछे की मरम न जानी।
ज्यों ज्यों आगे जाय दिनों दिन अधिक दुरानी ॥
फिरि के ताकै नाहिं बस्तु कहवाँ से पावै।

---

(१) पूरा। (२) हवा। (३) पाप के मारग या भाँडे की रखवाली करते हैं। (४) शांति। (५) अभ्यासी। (६) चल दिये।

ज्यों मिरगा कै बास भरम कै जन्म गँवावै ॥
अरुझा बेद पुरान ज्ञान बिनु को सुरझावै ।
सतसंगत से बिमुख बस्तु कहवाँ से पावै ॥
पलटू छूटै कर्म ना कैसे सकै उठाय ।
बस्तु धरी है पाछे आगे लिहिनि तकाय ॥

(२०२)

झूठै में सब जग चला छिल छिल जाता अंग ।
छिल छिल जाता अंग धसन भेड़ी की देखा ॥
करम बड़ा परधान गड़ी पत्थर पर मेखा ।
साच बात को मेटि झूठ को जाल पसारा ॥
जल पषान के बीच बहै सब सूधी धारा ॥
परघट है भगवान सकल घट सूझत नाहीं ।
जीव से करते द्रोह भरमना पूजन जाहीं ॥
पलटू मैं का से कहौं कुवाँ पड़ी है भंग ।
झूठै में सब जग चला छिल छिल जाता अंग ॥

(२०३)

लड़िका चूल्हे में लुका ढूँढ़त फिरै पहार ॥
ढूँढ़त फिरै पहार नहीं घट की सुधि जानै ।
जप तप तीरथ बरत जाय के तिल तिल छानै ॥
गई आप को भूलि और की बात न मानै ।
चूल्है लड़िका रहै चतुरई अपनी ठानै ॥
भरमी फिरै भुलान जाइ कै देस देसान्तर ।
लड़िका से नहिं भेट मिलत है पानी पाथर ॥
पलटू सतसंगति करै भूल में वाही सार[1] ।
लड़िका चूल्हे में लुका ढूँढ़त फिरै पहार ॥

(२०४)

सूधी मारग मैं चलौं हँसै सकल संसार ॥
हँसै सकल संसार करम की राह बताई ।

(१) भूल मिटाने को सतसंग ही सार जतन है ।

लोक बेद की राह चला हम से नहिँ जाई ॥
सूधी लिहा तकाय राह संतन की पाई ।
मन मेँ भया अनन्द छूटि गइ सब दुचिताई ॥
उन के इहवै हेतु[१] राह यह हमरी आवै ।
इहै बूझि के हँसै हाथ से निबुका[२] जावै ॥
पलटू सब का एक मत को अब करै बिचार ।
सूधी मारग मैं चलौं हँसै सकल संसार ॥

(२०५)

भरमि भरमि सब जग मुवा झूठा देवा सेव ॥
झूठा देवा सेव नाम को दिया भुलाई ।
बाँधे जमपुर जाहिँ काल चोटी घिसियाई ॥
पानी से जिन पिंड गरभ के बीच सँवारा ।
ऐसा साहिब छोड़ि जन्म औरै से हारा ॥
ऐसे मूरख लोग खबर ना करैँ अपानी ।
सिरजनहारा छोड़ि पूजते भूत भवानी ॥
पलटू इक गुरुदेव बिनु दूजा कोय न देव ।
भरमि भरमि सब जग मुवा झूठा देवा सेव ॥

(२०६)

संत चरन को छोड़ि कै पूजत भूत बैताल ॥
पूजत भूत बैताल मुए पर भूतै होई ।
जेकर जहवाँ जीव अन्त को होवै सोई ॥
देव पितर सब झूठ सकल यह मन की भ्रमना ।
यही भरम में पड़ा लगा है जीवन मरना ॥
देई देवा सेइ परम पद केहि ने पावा ।
भैरो दुर्गा सीव बाँधि कै नरक पठावा ॥
पलटू अंत घसीटिहै चोटी धरि धरि काल ।
संत चरन को छोड़ि कै पूजत भूत बैताल ॥

---

(१) संसार का यही अभिप्राय है। (२) निकला।

(२०७)

लिये कुल्हाड़ी हाथ में मारत अपने पाँय ॥
मारत अपने पाँय पूजत है देई देवा ।
सतगुरु संत बिसारि करै भूतन की सेवा ॥
चाहै कुसल गँवार अमीँ दै माहुर खावै ।
मने किये से लड़ै नरक में दौड़ा जावै ॥
पौंड़ै[1] जल के बीच हाथ में बाँधे रसरी ।
परै भरम में जाइ ताहि को कैसे पकरी ॥
पलटू नर तन पाइ कै भजन मँहै अलसाय ।
लिये कुल्हाड़ी हाथ में मारत अपने पाँय ॥

(२०८)

सात पुरी हम देखिया देखे चारो धाम ॥
देखे चारो धाम सबन माँ पाथर पानी ।
करमन के बसि पड़े मुक्ति की राह भुलानी ॥
चलत चलत पग थके छीन भइ अपनी काया ।
काम क्रोध नहिँ मिटे बैठ कर बहुत नहाया ॥
ऊपर डाला धोय मैल दिल बीच समाना ।
पाथर में गयो भूल संत का मरम न जाना ॥
पलटू नाहक पचि मुए सन्तन में है नाम ।
सात पुरी हम देखिया देखे चारो धाम ॥

(२०९)

घर में मेवा छोड़ि कै टेँटी बीनन जाय ॥
टेँटी बीनन जाय जानै येही है मेवा ।
तीरथ मँहै नहाय करै मूरति की सेवा ॥
छोड़ि बोलता ब्रह्म करै पथरे की पूजा ।
खसम न आवै पास नारि जब खोजै दूजा ॥
सूखा हाड़ चबाय स्वान मुख आवै लोहू ।

(१) तैरे।

रहै हाड़ के ओर[1] भेद ना जानै वोहू ॥
पलटू आगे धरा है आप से नाहीं खाय ।
घर में मेवा छोड़ि के टैंटी बीनन जाय ॥

(२१०)

लम्बा घूँघट काढ़ि कै लगवारन से प्रीति ॥
लगवारन से प्रीति जीव से द्रोह बढ़ावै ।
पूजत फिरै पषान नहीं जो बोलै खावै ॥
सम्मै पूरन ब्रह्म ताहि को तनिक न मानै ।
करै नटी[2] को काम लोक पतिबर्ता जानै ॥
उदर पालना करै नाम ठाकुर को लेई ।
सर्ब जीव भगवान ताहि को तनिक न सेई ॥
पलटू सबै सराहिये जरै जगत की रीति ।
लम्बा घूँघट काढ़ि कै लगवारन से प्रीति ॥

(२११)

बहुत पुरुष के भोग से बिस्वा होइ गइ बाँझ ॥
बिस्वा होइ गइ बाँझ जाहि के पुरुष घनेरे ।
नाहिँ एक की आस फिरै घर घर बहुतेरे ॥
एक केरि होइ रहै दुसर से होइ गलानी[3] ।
तुरत गरभ रहि जाइ सिवाती[4] चात्रिक पानी ॥
राम पुरुष को छोड़ि करै देवतन की पूजा ।
बिस्या की यह रीति खसम तजि खोजै दूजा ॥
पलटू बिना बिचार से मूरख डूबै माँझ[5] ।
बहुत पुरुष के भोग से बिस्वा होइ गइ बाँझ ॥

(२१२)

पलटू तन करु देवहरा मन करु सालिगराम ॥
मन करु सालिगराम पूजते हाथ पिराने ।
धावत तीरथ बरत रैनि दिन गोड़ खियाने ॥
माला फेरि न जाय परे अँगुरिन में घट्टा ।

(१) भूल । (२) हरजाई । (३) घिन । (४) स्वाँति । (५) मँझधार में ।

राम बोलि ना जाय जीभ में लागै लट्टा[1] ॥
निति उठि चंदन देत माथ कै लोहू सोखा ।
बालभोग के खात मिट्यो ना मन का धोखा ॥
जल पषान के पूजते सरा न एकौ काम ।
पलटू तन करु देवहरा मन करु सालिगराम ॥

(२१३)

सूधी मेरी चाल है सब को लागै टेढ़ ॥
सब को लागै टेढ़ बूझ बिनु कौन बतावै ।
आपु चलै सब टेढ़ टेढ़ हम को गोहरावै ॥
हम रहते निहकरम नाहिं करमन की आसा ।
तुम्हरे तीरथ बरत बहुरि मूरति बिस्वासा ॥
हमरे केवल राम आन को नाहीं जानों ।
तुम्हरे देवता पित्र भूत की पूजा मानो ॥
पलटू उलटा लोग सब नाहक करते खेढ़[2] ।
सूधी मेरी चाल है सब को लागै टेढ़ ॥

(२१४)

मैं अपने रँग बावरी जरि जरि मरते लोग ॥
जरि जरि मरते लोग सोच नाहक को करते ।
पर संपति को देखि मूढ़ बिनु मारे मरते ॥
ना काहू की जाति पाँति हम बैठन जाई ।
लोग करै चौवाव[3] एक को एक बुलाई ॥
चलिहौं सूधी चाल राम के मारग माहीं ।
देव पितर तजि करम मानौं काहू को नाहीं ॥
पलटू हम को देखि कै लोगन के भा रोग ।
मैं अपने रँग बावरी जरि जरि मरते लोग ॥

(१) लासा वँध जाना । (२) रार, झगड़ा । (३) निन्दा ।

॥ जीव-हिंसा ॥

(२१५)

लहम कुल्लहुम जिसिम का नबी किया फर्मूद[१] ॥
नबी किया फर्मूद हदीस की आयत माहीँ ।
सब में एकै जान और कोउ दूजा नाहीँ ॥
खून गोस्त है एक मौलवी जिबह न छाजै[२] ।
सब में रोसन हुआ नबी का नूर बिराजै ॥
क्यों खैंचै तू रूह[३] गुनहगारी में पड़ता ।
बुजरुग के फर्मूद बमोजिब नाहीँ डेरता ॥
पलटू जो बेदरदी सो काफिर मरदूद ।
लहम कुल्लहुम जिसिम का नबी किया फर्मूद ॥

(२१६)

गरदन मारै खसम की लगवारन के हेत ॥
लगवारन के हेत पसू औ मेंढ़ा मारै ।
पूजै दुरगा देव देवखरी सिर दै मारै ॥
माटी देवखरि बाँधि मुए की पूजा लावै ।
जीवत जिउ को मारि आनि कै ताहि चढ़ावै ॥
सब में है भगवान और ना दूजा कोई ।
तेकर यह गति करै भला कहवाँ से होई ॥
पलटू जिउ को मारि कै बल देवतन को देत ।
गरदन मारै खसम की लगवारन के हेत ॥

॥ जाति-भेद ॥

(२१७)

हरि को भजै सो बड़ा है जाति न पूछै कोय ।
जाति न पूछै कोय हरी को भक्ति पियारी ।
जो कोइ करै सो बड़ा जाति हरि नाहिँ निहारी ॥
बधिक अजामिल रहे रहे फिर सदन कसाई ।
गनिका बिस्वा रही बिमान पै तुरत चढ़ाई ॥

(१) नबी ने फ़र्माया है कि कुल माँस जानदार की देह से आता है। (२) शोभा नहीं देता। (३) जान।

नीच जाति रैदास आपु में लिया मिलाई।
लिया गिद्ध को गोदि दिया बैकुंठ पठाई॥
पलटू पारस के छुए लोहा कंचन होय।
हरि को भजै सो बड़ा है जाति न पूछै कोय॥

(२१८)

साहिब के दरबार में केवल भक्ति पियार॥
केवल भक्ति पियार साहिब भक्ती में राजी।
तजा सकल पकवान लिया दासीसुत भाजी[१]॥
जप तप नेम अचार करै बहुतेरा कोई।
खाये सेवरी के बेर[१] मुए सब ऋषि मुनि रोई॥
किया युधिष्ठिर यज्ञ बटोरा सकल समाजा।
मरदा सब का मान सुपच बिनु घंट न बाजा॥
पलटू ऊँची जाती को जनि कोइ करै हंकार।
साहिब के दरबार में केवल भक्ति पियार॥

(२१९)

गनिका गिद्ध अजामिल सदना औ रैदास॥
सदना औ रैदास भली इनकी बनि आई।
निसु दिन रहैं हजूर भक्ति कीन्ही अधिकाई॥
जाति न उत्तम येह इन्हैं सम और न कोई।
ब्रह्मा कोटि कुलीन नीच अब कहिये सोई॥
उनसे बड़ा न कोय और सब उनके नीचे॥
उन्हैं बराबर नहीं कोऊ तिलोक के बीचे॥
अबिनासी की गोद में पलटू करैं बिलास।
गनिका गिद्ध अजामिल सदना औ रैदास॥

---

(१) श्री कृष्ण ने राजा दुर्योधन का छप्पन प्रकार का भोजन त्याग कर विदुर भक्त का अलोना साग बड़ी रुचि से खाया था और सेवरी के कतरे हुए बेर बड़े चाव से चख कर अहंकारी ऋषियों और मुनियों के दाँत खट्टे किये।

॥ निन्दक ॥

(२२०)

निन्दक जीवै जुगन जुग काम हमारा होय ॥
काम हमारा होय बिना कौड़ी को चाकर ।
कमर बाँधि के फिरै करै तिहुँ लोक उजागर ॥
उसे हमारी सोच पलक भर नाहिँ बिसारी ।
लगी रहै दिन रात प्रेम से देता गारी ॥
संत कँहै दृढ़ करै जगत का भरम छुड़ावै ।
निन्दक गुरू हमार नाम से वही मिलावै ॥
सुनि के निन्दक मरि गया पलटू दिया है रोय ।
निन्दक जीवै जुगन जुग काम हमारा होय ॥

(२२१)

निन्दक रहै जो कुसल से हम को जोखों नाहिँ ॥
हमको जोखों नाहिँ गाँठि को साबुन लावै ।
खरचै अपनो दाम हमारी मैल छुड़ावै ॥
तन मन धन सब देहि संत की निन्दा कारन ।
लेहिँ संत तेहि तार बड़े वे अधम-उधारन ॥
संत भरोसा बड़ा सदा निन्दक का करते ।
निन्दक की अति प्रीति भाव दूसर नहिँ धरते ॥
पलटू वे परस्वारथी निन्दक नर्क न जाहिँ ।
निन्दक रहै जो कुसल से हम को जोखों नाहिँ ॥

(२२२)

निन्दक है परस्वारथी करै भक्त का काम ॥
करै भक्त का काम जगत में निन्दा करते ।
जो वे होते नाहिँ भक्त कहवाँ से तरते ॥
आप नरक में जाहिँ भक्त का करैँ निबेरा ।
फिर भक्तन के हेतु करैँ चौरासी फेरा ॥

करैं भक्त की सोच उन्हें कुछ और न भावै।
देखो उनकी प्रीति लगन जब ऐसी लावै॥
पलटू धोबी अस मिल्यौ धोवत है बिनु दाम।
निन्दक है परस्वारथी करै भक्त का काम॥

॥ मिश्रित ॥

(२२३)

बनिया पूरा सोई है जो तौलै सत नाम॥
जो तौलै सत नाम छिमा का टाट बिछावै।
प्रेम तराजू करै बाट बिस्वास बनावै॥
बिबेक की करै दुकान ज्ञान का लेना देना।
गादी है संतोष नाम का मारै टेना॥
लादै उलदै भजन बचन फिर मीठे बोलै।
कुंजी लावै सुरत सबद का ताला खोलै॥
पलटू जिसकी बन परी उसी से मेरा काम।
बनिया पूरा सोई है जो तौलै सत नाम॥

(२२४)

भीतर औंटै तत्व को उठै सबद की खानि॥
उठै सबद की खानि रहै अंतर लौ लागी।
सुरति देइ उदगारि[1] जोगिनि आपुइ जागी॥
सहज घाट हरि ध्यान ज्ञान से मन परमोधै।
नहिँ संग्रह नहिँ त्याग आपनी काया सोधै॥
प्रेम भभूत लगाइ धरै धीरज मृगछाला।
तिलक उनमुनी भाल जपत है अजपा माला॥
पलटू ऐसा होय जो सो जोगी परमान।
भीतर औंटै तत्व को उठै सबद की खानि॥

(२२५)

बार बार बिनती करै पलटूदास न लेइ॥
पलटूदास न लेइ रहै कर जोरे ठाढ़ी।

(१) जगाय।

सरनागति मैं रहौं सरन बिनु लागै गाढ़ी[1] ॥
गोड़ दाबि मैं देउँ चरन धै सेवा करिहौं ।
चौका देइहौं लीपि बहुरि मैं पानी भरिहौं ॥
पैंड़ा देउँ बुहारि सबन के जूठ उठावौं ।
जनि दुरियावहु मोहिं रहै मैं इहवाँ पावौं ॥
मुक्ति रहै द्वारे खड़ी लट से झाड़ू देइ ।
बार बार बिनती करै पलटूदास न लेइ ॥

(२२६)

सुरति सुहागिनि उलटि कै मिली सबद में जाय ॥
मिली सबद में जाय कन्त को बसि में कीन्हा ।
चलै न सिव कै जोर जाय जब सक्ती लीन्हा ॥
फिर सक्ती ना रही मिली जब सिव में जाई ।
सिव भी फिर ना रहे सक्ति से सीव कहाई ॥
अपने मन कै फेर और ना दूजा कोई ।
सक्ती सिव है एक नाम कहने को दोई ॥
पलटू सक्ती सीव का भेद गया अलगाय ।
सुरत सुहागिनि उलटि कै मिली सबद में जाय ॥

(२२७)

कहँ खोजन को जाइये घरहीं लागा रंग ॥
घरहीं लागा रंग छुटे तीरथ ब्रत दाना ।
जल पषान सब छुटे आपु में उट्ठि समाना ॥
काम क्रोध को छोड़ि परम सुख मिला अनंदा ।
लोभ मोह को जारि करम का काटा फंदा ॥
लगै न भूख पियास जगत की आसा त्यागा ।
सबद मँहै गलतान सुरति का पोहै धागा ॥
पलटू दिढ़ ह्वै लगि रहै छुटै नहीं सतसंग ।
कहँ खोजन को जाइये घरहीं लागा रंग ॥

---

(१) गाढ़ = दुख ।

(२२८)

मन माया में मिलि गया मारा गया बिबेक ॥
मारा गया बिबेक चोर का पहरू भेदी।
दोऊ की मति एक सहर में करैं अहेदी[1] ॥
आँधर नगर के बीच भया धमधूसर[2] राजा।
करै नीच सब काम चलै दस दिसि दरवाजा ॥
अधरम आठो गाँठि न्याव बिनु धीगम सूदा[3]।
टकमि दमारि[4] गुलाम आप को भयो असूदा[5] ॥
जानि बूझि कूआँ परै पलटू चलै न देख।
मन माया में मिलि गया मारा गया बिवेक ॥

(२२९)

देखो जिउ की खोय को फिर फिर गोता खाय ॥
फिर फिर गोता खाय तनिक ना लज्जा आवै।
पड़िगा वही सुभाव छुटै ना लाख छुटावै ॥
निमिख भरे[6] की खुसी जन्म कोटिन दुख पावै।
चौरासी घर जाय आपु में आपु बँधावै ॥
स्वान लाख जो खाय दिया चाटै पै चाटै।
छुटै न जिउ की खोय पकरि के पुरजे काटै ॥
पलटू भजै न नाम को मूरख नर तन पाय।
देखो जिउ की खोय को फिर फिर गोता खाय ॥

(२३०)

मुए पार की बात है फिरै न कोऊ एक ॥
फिरै न कोऊ एक मुक्ति धौं कैसी होती।
स्याह जरद या सुरख रंग, हीरा या मोती ॥
मुक्ति के हाथ न पाँव मुक्ति को सब कोउ मानै।

(१) एक लिपि मे "अलेदी" है। "अहदी" बादशाही वक्त में वहादुर सिपाही होते थे जो घर बैठे तनखाह पाते थे और सिर्फ भारी मुहिम पर भेजे जाते थे। इन की ज़बरदस्ती और जुल्म प्रसिद्ध है। (२) मोटे। (३) धींगम धींगा, मनमाना। (४) टका दमड़ी के लिये। (५) संतुष्ट। (६) छिन भर।

है परदे की बात ताहि से सब कोउ जानै ॥
सब कोउ होय खराब मुक्ति के पाछे जाई।
जानी केहि बिधि जाय मुक्ति कहु किन ने पाई ॥
पलटू बातैं मुक्ति की खसर फसर[1] करि देख।
मुए पार की बात है फिरै न कोऊ एक ॥

(२३१)

चिन्ता रूपी अगिन में जरै सकल संसार ॥
जरै सकल संसार जरत निरपति को देखा।
बादसाह उमराव जरत हैं सैयद सेखा ॥
सुर नर मुनि सब जरैं जोगी औ जती सन्यासी।
पंडित ज्ञानी चतुर जरै कनफटा उदासी ॥
जंगम सिवरा जरै जरै नागा बैरागी।
तपसी दूना जरै बचै नहिँ कोऊ भागी ॥
पलटू बचते सन्त जन जेकरे नाम अधार।
चिन्ता रूपी अगिन में जरै सकल संसार ॥

(२३२)

जा को निरगुन मिला है भूला सरगुन चाल ॥
भूला सरगुन चाल बचन ना मुख से आवै।
तसबी[2] और किताब नहीँ काजी को भावै ॥
पडित पढ़ै न बेद तीरथ बैरागी त्यागा।
कायथ कलम न लेय राज तजि राजा भागा ॥
बेस्वा तजा सिँगार सिद्ध की गइ सिद्धाई।
रागी भूला राग जननि सुत देइ बहाई ॥
पलटू भूली गीथिनी[3] कहूँ भात कहुँ दाल।
जा को निरगुन मिला है भूला सरगुन चाल ॥

(२३३)

अमृत को सागर भर्‌यो देखे प्यास न जाय ॥
देखे प्यास न जाय पिये बिनु कौन बतावै।

(१) सरपट। (२) माला। (३) होशियार औरत।

कल्प बृच्छ को देखि खाये बिनु भूख न जावै ॥
और की दौलत देखि दरिद्दर नाहिँ नसाई ।
अंधा पावै आँखि साच वा की बैदाई ॥
लोहा कंचन होय पारस की करै सरहना ।
क्या मलया की सिफत काठ को काठै रहना ॥
सतगुरु तुम्हरे बचन को पलटू ना पतियाय ।
अमृत को सागर भर्‌यो देखे प्यास न जाय ॥

(२३४)

जैसे नद्दी एक है बहुतेरे हैँ घाट ॥
बहुतेरे हैँ घाट भेद भक्तन मेँ नाना ।
जो जेहि संगत परा ताहि के हाथ बिकाना ॥
चाहै जैसी करै भक्ति सब नामहिँ केरी ।
जा की जैसी बूझ मारग सो तैसो हेरी ॥
फेर[1] खाय इक गये एक ठौ गये सिताबी ।
आखिर पहुँचे राह दिना दस भई खराबी ॥
पलटू एकै टेक ना जेतिक[2] भेष तै बाट ।
जैसे नद्दी एक है बहुतेरे हैँ घाट ॥

(२३५)

साध बचन साचा सदा जो दिल साचा होय ॥
जो दिल साचा होय रहै ना दुबिधा भागै ।
जो चाहै सो मिलै बात मेँ बिलँब न लागै ॥
मन बच कर्म लगाय संत की सेवा लावै ।
उकठा काठ बियास[3] साच जो दिल मेँ आवै ॥
जनको है बिस्वास तेही को बचन फुरानी[4] ।
ह्वैगा उन का काम सन्त की महिमा जानी ॥
पलटू गाँठि मेँ बाँधिये खाली पड़ै न कोय ।
साध बचन साचा सदा जो दिल साचा होय ॥

(१) चक्कर । (२) जितने । (३) उगै । (४) सच्चा ।

(२३६)

महीँ भुलाना फिरत हौं कि जगतै गया भुलाय ॥
जगतै गया भुलाय देखि सब हँसते हम कहँ ।
उनकी करनी देखि हँसत हैं हमहूँ उन कहँ ॥
बाय जोगी को जगत जगत को जोगी बाई ।
दोऊ को भौंसे आनि कहाँ अब तीसर पाई ॥
एक साहु सौ चोर चोर को साहु बनावै ।
जगत भगत से बैर आपनी दूनौ गावै ॥
पलटू तीसर है नहीँ साखी भरै जो आय ।
महीँ भुलाना फिरत हौं कि जगतै गया भुलाय ॥

(२३७)

जगत भगत से बैर है चारो जुग परमान ॥
चारो जुग परमान बैर ज्योँ मूस बिलाई ।
नेवर भुवंगम बैर कँवल हिम[१] कर अधिकाई ॥
हस्ती केहरि[२] बैर बैर है दूध खटाई ।
भैंस घोड़ से बैर चोर पहरू से भाई ॥
पाप पुन्य से बैर अगिन औ बैरी पानी ।
संतन यही बिचार जगत की बात न मानी ॥
पलटू नाहक भूँकता जोगी देखे स्वान ।
जगत भगत से बैर है चारो जुग परमान ॥

(२३८)

लेहु परोसिनि झोपड़ा नित उठि बाढ़त रार ॥
नित उठि बाढ़त रार काहिको सरबरि कीजै ।
तजिये ऐसा संग देस चलि दूसर लीजै ॥
जीवन है दिन चारि काहे को कीजै रोसा ।
तजिये सब जंजाल नाम के करो भरोसा ॥

(१) पाला । (२) बाघ ।

भीख माँगि बरु खाय खटपटी नीक न लागै।
भरी गोन गुड़ तजै तहाँ से साँझै भागै॥
पलटू ऐसन बूझि कै डारि दिहा सिर भार।
लेहु परोसिनि झोपड़ा नित उठि बाढ़त रार॥

(२३९)

सिध चौरासी नाथ नौ बीचै सभै भुलान॥
बीचै सभै भुलान भक्ति की मारग छूटी।
हीरा दिहिन है डारि लिहिन इक कौड़ी फूटी॥
राँड़ माँड़ में खुसी जक्त इतने में राजी।
लोक बड़ाई तुच्छ नरक में अटकी बाजी॥
झूठ समाधि लगाय फिरै मन अंतै भटका।
उहाँ न पहुँचा कोय बीच में सब कोइ अटका॥
पलटू अठएँ लोक में पड़ा दुपट्टा तान।
सिध चौरासी नाथ नौ बीचै सभै भुलान॥

(२४०)

हंस चुगैं ना घोंघी सिंह चरैं ना घास॥
सिंह चरैं ना घास मारि कुंजर को खाते।
जो मुरदा ह्वै जाय ताहि के निकट न जाते॥
वे ना खाहिं असुद्ध रीत कुल की चलि आई।
खाये बिनु मरि जाहिं दाग ना सकहिं लगाई॥
सन्त सभन सिरताज धरन धारी सो धारी।
नई बात जो करैं मिलत है उनको गारी॥
भीख न माँगैं सन्त जन कहि गये पलटूदास।
हंस चुगैं ना घोंघी सिंह चरैं ना घास॥

(२४१)

कृस्न कन्हैया लाल है वह गोकुल के घाट॥
वह गोकुल के घाट जाइ के गोता मारै।

जीवन आसा त्यागि बूड़ि के ढूँढ़ निकारै॥
मान बड़ाई छोड़ि चित्त हरि चरनन लावै।
कुंजगली के बीच जाय तब पिय को पावै॥
देखै पिय को रूप सुन्दर बहु स्याम सलोना।
बरै तेल की टेम आगि में बरता सोना॥
कहि पलटू परसाद यह पावै प्रेम की बाट।
क्रुस्न कन्हैया लाल है वह गोकुल के घाट॥

(२४२)

गिरहस्ती में जब रहे पेट को रहे हैरान॥
पेट को रहे हैरान तसदिया[१] से मिल्यो अहारा।
साग मिल्यो बिनु लोन रही तब ऐसी धारा॥
आये हरि की सरन बहुत सुख तब से पाई।
लुचुई[२] चारो जून खाँड औ खोवा खाई॥
लड्डू पेड़ा बहुत सेंत[३] कोउ खाता नाहीँ।
जलेबी चीनी कन्द भरा है घर के माहीँ॥
पलटू हरि की सरन में हाजिर सब पकवान।
गिरहस्थी में जब रहे पेट को रहे हैरान॥

(२४३)

भरि भरि पेट खिलाइये तब रीझैगा भेष॥
तब रीझैगा भेष जगत में करै बड़ाई।
लाख भगत जो होय खाये बिनु निंदत जाई॥
रहनि लखै नहिँ कोय नाहिँ टकसार बिचारै।
भाव भक्ति ना लखै खोजत सब फिरै अहारै॥
भेष में नाहिँ बिबेक भये दस बीस बिबेकी।
कोटिन में दस बीस सन्त तिन रहनी देखी॥
पलटू रहै अपान में आन में मारै मेख।
भरि भरि पेट खिलाइये तब रीझैगा भेष॥

---

(१) कष्ट। (२) पूरी। (३) मुफ्त।

(२५४)

कौड़ी गाँठि न राखई हमा-नियामत[1] खाय ॥
हमा-नियामत खाय नहीँ कुछ जग की आसा ।
छत्तिस ब्यंजन रहे सबर से हाजिर खासा ॥
जेकरे है सत नाम नाम की चेरी माया ।
जोरू कहवाँ जाय खसम जब कैद मेँ आया ॥
माया आवै चली रैनि दिन मैं दुरियावोँ ।
सतगुरु दास कहाय नहीँ मैं माँगन ज़ावोँ ॥
राजा औ उमराव हाथ सब बाँधे आवैँ ।
द्वारे से फिरि जायँ नहीँ फिर मुजरा पावैँ ॥
जंगल मेँ मंगल करै पलटू बेपरवाय ।
कौड़ी गाँठि न राखई हमा-नियामत खाय ॥

(२५५)

जब देखौ तब सादी नौबत आठौ पहर ॥
नौबत आठौ पहर गैब की निसु दिन भरती ।
पचरँग जोड़ा खुसी दुरवेस की सादी चढ़ती ॥
आफताब[2] भा सूर[3] रोसनी दिल मेँ आई ।
फिरै गैब का छत्र जिकर[4] का मुस्क[5] लगाई ॥
अन्दर भूलै फील[6] खाब मेँ खतरा नाहीँ ।
सबर है पीठी पलँग सेहरा नाम इलाही ॥
पलटू जलवा नूर का ज्योँ दरियाव मेँ लहर ।
जब देखौ तब सादी नौबत आठौ पहर ॥

(२५६)

रन का चढ़ना सहज है मुसकिल करना जोग ॥
मुसकिल करना जोग चित्त को उलटि लगावै ।
बिषय बासना तजै प्रान ब्रह्मंड चढ़ावै ॥

---

(१) छप्पन प्रकार का भोजन। (२) सूरज। (३) अंधा। (४) सुमिरन। (५) कस्तूरी। (६) हाथी।

साधै वायू प्रान कुंडली करै उथपना[१] ।
अष्ट कँवल दल उलटि कँवल दल द्वादस लखना ॥
इँगला पिंगला सोधि बंक के नाल चढ़ावै ।
चार कला को तोड़ि चक्र षट जाय बिधावै ॥
पलटू जो संजम करै करै रूप से भोग ।
रन का चढ़ना सहज है मुसकिल करना जोग ॥

(२४७)

आगि लागि मसि जरि गई कागद जरै न कोय ॥
कागद जरै न कोय कागद है बहुत पुराना ।
अक्खर[२] आवै जाय अखर को नाहिँ ठिकाना ॥
वो भी जरै बनाय अखर का लिखनेहारा ।
बाँचै सो जरि जाय जरै जो करै बिचारा ॥
कोटिन अक्खर बाद अन्त कागद भी जरता ।
कागद जरे के बाद रहै कागद का करता ॥
पलटू जब कागद जरै वा दिन मेरा होय ।
आगि लागि मसि जरि गई कागद जरै न कोय ॥

(२४८)*

तबक़ चारदह अन्दर है अस्थल बे दरियाव ॥
अस्थल बे दरियाव अर्श कुर्सी खुद दीदन ।
तूबा दरख़त अज़ हद शीरीँ मेवा खुर्दन ॥
नूर तजल्ली रूह लाहूत रसीदा नादिर ।
रौशन-जमीर बेचूँ सीना-साफ़ क़ाज़ी क़ादिर ॥
हूहू गुफ़्तन फ़ना रूह की सोई बातिन ।
पाक अल्लाह मकान तहाँ को भी वो साकिन ॥
पलटू आरिफ़ से कहै तू भी चाहो जाव ।
तबक़ चारदह अन्दर है अस्थल बे दरियाव ॥

---

(१) कुंडलिनी नाड़ी का मुँह ऊपर करै । (२) अच्छर ।

* कुंडलिया नं० २४८ के बारे में पेज ९७ के फुटनोट में देखिये ।

(२४९)

बस्ती माहिँ चमार की बाम्हन करत बेगार ॥
बाम्हन करत बेगार लोग सब गैर-बिचारी।
मूरख है परधान देहि ज्ञानी को गारी ॥
अद्वैता को मेटि द्वैत कै करते थापन।
दौलत के सम्बन्ध अमल वे करते आपन ॥
ज्ञानि महरसी[1] सन्त ताहि की निन्दा करते।
अज्ञानी के मध्य सिफत वे अपनी धरते ॥
पलटू पीतर कनक को कोउ न करै बिचार।
बस्ती माहिँ चमार की बाम्हन करत बेगार ॥

(२५०)

कुत्ता हाँड़ी फँसि मुवा दोस परोसि क देय ॥
दोस परोसि क देय आपनो हठ नहिँ मानै।
न्योत रही लगवार खसम से परदा तानै ॥
कपड़ा की सुधि नाहिँ नंगी ह्वै पड़ी उतानी।
कोऊ मने जो करै बोलती करकस बानी ॥
माया कै लग भूत खसम को नाहिँ डेराती।
घर की सम्पति छाड़ि और की जोगवै थाती ॥
पलटू कूसंगति पड़ी पिउ कै नाम न लेय।
कुत्ता हाँड़ी फँसि मुवा दोस परोसि क देय ॥

(२५१)

जा के रथ पर राम हैं को करि सकै अकाज ॥
को करि सकै अकाज बार नहिँ वा को बाँकै।

---

* (१) कुंडलिया नं० २४८—चौदहवे भुवन में विना पानी के धरती है जहाँ .खुद
का तख्त [अर्श व कुर्सी] दीख पड़ता है और कल्प वृत्त [तूबा दरख्त] का अत्यं
स्वादिष्ट फल खाने को मिलता है [खुर्दन]। उस शून्य लोक [लाहूत] में पहुँच
हुई [रसीदा] सुरत का प्रकाश विचित्र हो जाता है और वह अंतर-यामी, अद्वितीय
[वेचूँ। निर्मल-हृदय [रौशन-ज़मीर] अधिष्ठाता [काज़ी] और सर्व शक्तिमा
[कादिर] हो जाती है। वही पावन स्थान अल्लाह का है जहाँ ॐ ॐ का शब्
गाजता है। [हू हू गुफ़्तन] और सुरत विदेह होने पर वहीं वासा पाती है [साकिन]
(१) महर्षि=मह ऋषि।

चक्र सुदर्सन छुटै कोऊ कुनजर से ताकै ॥
लोहू ढारैं राम सन्त को ढरै पसीना ।
का बालक पहलाद भया हरिनाकुस पीना[1] ॥
करि पंडौ की पैज भरथ[2] कौ दिया जिताई ।
अम्बरीक के हेतु दुर्बासै नाच नचाई ॥
पलटू मार्‌यौ ग्राह कौ हाँक[3] दियौ गजराज ।
जा के रथ पर राम हैं को करि सकै अकाज ॥

(२५२)

होनी रही सो ह्वै गई रोइ मरै संसार ॥
रोइ मरै संसार काज कुछ उन से नाहीं ।
गये हाथ से निबुकि[4] तेही से सब पछिताहीं ॥
भये काग से हंस काग सब निन्दा करते ।
लोहा से भये कनक सोच सब लोहा मरते ॥
ज्ञानी अब हम भये रोवैं सब मूरख संगी ।
तिल से भये फुलेल तेल सब मार तिलंगी ॥
पलटू उतरे पार हम भाड़ झोंकि सब भार ।
होनी रही सो ह्वै गई रोइ मरै संसार ॥

(२५३)

सिव सक्ती के मिलन में मो कौ भयौ अनन्द ॥
मो कौं भयौ अनन्द मिल्यौ पानी में पानी ।
दोऊ से भा सूत नहीं मिलि कै अलगानी ॥
मुलुक भयौ सलतन्त मिल्यौ हाकिम कौ राजा ।
रैयत करै अराम खोलि कै दस दरवाजा ॥
छूटी सकल बियाधि मिटी इन्द्रिन की दुतिया ।
को अब करै उपाधि चोर से मिलि गइ कुतिया ॥
पलटू सतगुरु साहिब काटौ मेरौ बन्द ।
सिव सक्ती के मिलन में मो कौ भयौ अनन्द ॥

---

(१) मोटा। (२) पांडवों के साथ अपना प्रण रख कर श्रीकृष्ण ने महाभार

(२५४)

ऐसा ब्राह्मन मिलै जो ता के परछौं पाँय ॥
ता के परछौं पाँय ब्रह्म अपने को पावै ।
भर्म जनेऊ तोरि प्रेम तिरसूत बनावै ॥
सब कर्मन को करै कर्म से रहता न्यारा ।
दुतिया देइ बहाय ब्रह्म का करै बिचारा ॥
ज्ञान दिवस में सयन मोह रजनी में जागै ।
पारब्रह्म भगवान ताहि घर भिच्छा माँगै ॥
चेतन देइ जगाय ब्रह्म की गाँठि को खोलै ।
करै गायत्री गुप्त सब्द ब्रह्मांड में बोलै ॥
पलटू तजै अठारह सहस बरन ह्वै जाय ।
ऐसा ब्राह्मन मिलै जो ता के परछौं पाँय ॥

(२५५)

सब बैरागी बटुरि कै पलटुहि किया अजात ॥
पलटुहि किया अजात परभुता देखि न जाई ।
बनिया काल्हिक[1] भक्त प्रगट भा सब दुतियाई[2] ॥
हम सब बड़े महन्त ताहि को कोउ न जानै ।
बनिया करै पखंड ताहि को सब कोउ मानै ॥
ऐसी इर्षा जानि कोऊ ना आवै खाई ।
बनिया ढोल बजाय रसोई दिया लुटाई ॥
मालपुवा चारिउ बरन बाँधि लेत कछु खात ।
सब बैरागी बटुरि कै पलटुहि किया अजात ॥

(२५६)

हींग लगाइस भात में भूल गई है नार ॥
भूल गई है नार आन के आनै कीन्हा ।
कातिस मोटा सूत कातन को चाही झीना ॥
लहँगा पाछे जरै चूल्ह में पानी नावा ।

(१) कल्ह का । (२) अलग कर दिया ।

हँसिया को है ब्याह गीत खुरपा के गावा ॥
देय महावर आँख गोड़ में काजर लावै ।
ऐसी भोली नारि ताहि को को समुझावै ॥
पलटू वाहि अबूझ है अंत खायगी मार ।
हींग लगाइस भात में भूल गई है नार ॥

(२५७)

घरिया ओटै तत्व की परै नाम टकसार ॥
परै नाम टकसार द्वादस सन[1] बहुत करकरा ।
ज्ञान चोख से चोख रैनि दिन पड़े धरधरा ॥
चौकस करै बिबेक सरन जो जो भरि आवै ।
ऐसा सिक्का होय कोई ना बट्टा लावै ॥
देवै ठासा बेहद परै सनवाती सीका[2] ।
चारि खूँट में, चलै जियत इक होय रती का ॥
पलटू बानी परा कँह लेहैं सन्त बिचार ।
घरिया ओटै तत्व की परै नाम टकसार ॥

(२५८)

सतगुरु के परताप से पकरा पाँचो चोर ॥
पकरा पाँचो चोर नगर में अदल चलाया ।
तिर्गुन दिया निकारि आनि कै भक्ति बसाया ॥
लोभ मोह को पकरि ताहि की गरदन मारी ।
तृस्ना औ हंकार पेट दियो इनको फारी ॥
दुर्मति दई निकारि सुमति का चाबुक दीन्हा ।
चढ़े सिपाही संत अमल कायागढ़ कीन्हा ॥
पलटू संजम में किया परा मुलुक में सोर ।
सतगुरु के परताप से पकरा पाँचो चोर ॥

(२५९)

दूसर जनमत मारिये की बरु रहिये बाँझ ॥
की बरु रहिये बाँझ कोख में दाग लगावै ।

(१) सन १२ के सिक्के की चाँदी सोना बहुत खरा मशहूर है। (२) सिक्का।

जामै[1] पेड़ मदार ताहि में क्या फल आवै ॥
जो जनमै हरि भक्त जगत में सोभा पावै ।
कुल में फूलै कमल पुत्रवंती कहवावै ॥
कौसिल्या देवकी बड़ी अब कहिये सोई ।
हरि जन में हरि रहै भार जिन लीन्हा दोई ॥
पलटू सोई पुत्रवती भक्त रहै जेहि माँझ[2] ।
दूसर जनमत मारिये की बरु रहिये बाँझ ॥

(२६०)

आगि लगो वहि देस में जहँवाँ राजा चोर ॥
जहँवाँ राजा चोर प्रजा कैसे सुख पावै ।
पाँच पचीस लगाइ रैनि दिन सदा मुसावै ॥
आठौ पहर उपाधि रहै नाना बिधि लागी ।
काम क्रोध हंकार सकै ना रैयत भागी ॥
लोभ मोह की दिनै[3] गले बिच नावै फाँसी ।
लोक लाज मरजाद चलावै तिरगुन गाँसी ॥
पलटू रैयत क्या करै चलै ना एकौ जोर ।
आगि लगो वहि देस में जहँवाँ राजा चोर ॥

(२६१)

यह अचरज हम देखिया कानी काजर देइ ॥
कानी काजर देइ खसम के मन ना मानै ।
निसि दिन करै सिँगार भेद या बिरला जानै ॥
नख सिख खोटी मोटि पहिरि कै बैठी गहना ।
मूरख देखन जाय देखि कै करै सरहना ॥
बोलै मीठी बोल सबन को बेगि रिझावै ।
नाहिँ खसम से भेंटि बैठि कै बात बनावै ॥
पलटू या संसार में झूठ कहै सो लेय ।
यह अचरज हम देखिया कानी काजर देय ॥

(१) जगी । (२) उदर में । (३) दिन दहाड़े ।

(२६२)

मुसलमान रब्बी मेरी हिन्दू भया खरीफ ॥
हिन्दू भया खरीफ दोऊ है फसिल हमारी ।
इनको चाहै लेइ काटि कै बारी बारी ॥
साल भरे में मिली यही हम को जागीरी ।
चाकर भये हजूरी कौन अब करै तगीरी[1] ॥
दूनौं को समुझाइ ज्ञान का दफतर खोलै ।
सब कायल होइ जाय अमल दै कोऊ न बोलै ॥
दोऊ दीन के बीच में पलटूदास हरीफ[2] ।
मुसलमान रब्बी मेरी हिन्दू भया खरीफ ॥

(२६३)

नाचन को ढँग नाहिँ है कहती आँगन टेढ़ ॥
कहती आँगन टेढ़ जक्त की लाज लजाई ।
लम्बा घूँघट काढ़ि डेरैँ[3] फिर नाचन आई ॥
जाति बरन मरजाद छुटी ना लोक बड़ाई ।
करै खसम को चाह खसम का[4] सहजे पाई ॥
अपनी बात उड़ाइ आपु से जैसे भूसा ।
झौंसे पेड़ बनाय पाछे से फड़िहै फरसा[5] ॥
पलटू पावै खसम को रहै संत की खेढ़ ।
नाचन को ढँग नाहिँ है कहती आँगन टेढ़ ॥

(२६४)

पलटू खोजै पूरबे घर में है जगन्नाथ ॥
घर में है जगन्नाथ सकल घट व्यापक सोई ।
पसु पंछी चर अचर और नहिं दूजा कोई ॥
पूरन प्रगटे ब्रह्म देँह धरि सब में आये ।
दिया कर्म को आड़ भेद यह बिरलन पाये ॥

---

(१) तगी । (२) निपुन । (३) लोक लाज के डर से लम्बा घूँघट काढ़ कर
(४) क्या । (५) लोक लाज और कुल कानि की पौद को झुलस डाले नहीं तो
जाने पर फरसा से काटने की जरूरत होगी ।

उपजै बिनसै देँह जीव सो मरता नाहीँ ।
कहन सुनन को जुदा रहत है सब घट माहीँ ॥
चलते चलते पग थका एकौ लगा न हाथ ।
पलटू खोजै पूरबे घर में है जगन्नाथ ॥

(२६५)

आन को सेँदुर देखि कै तू का फोरै लिलार[1] ॥
तू का फोरै लिलार नारि तू बड़ी अनारी ।
तू ना देवै जाय देखि क्या जरै हमारी ॥
तेरे करम में नाहिँ देखि क्या सरबर[2] करती ।
चलि जा अपनी राह सोच में नाहक परती ॥
जेकँहै चाहै पीव ताहि को करै सोहागिनि ।
समुझ आपनी चूक नारि तू बड़ी अभागिनि ॥
पलटू सेवै साधु को तब रीझै करतार ।
आन को सेँदुर देखि कै तू का फोरै लिलार ॥

(२६६)

पलटू पारस नाम का मनै रसायन होय ॥
मनै रसायन होय करै या तन की सीसी ।
संपुट दे गुरु ज्ञान बिस्वास दवाई पीसी ॥
दसौ दिसा से मूँदि जोग की भाठी बारै ।
तेहि पर देहि चढ़ाय ब्रह्म की अग्नि से जारै ॥
इँधन लावै ध्यान प्रेम रस करै तयारी ।
सबद सुरति के बीच तहाँ मन राखै मारी ॥
जड़ि बूटी के खोजते गई सिध्याई खोय ।
पलटू पारस नाम का मनै रसायन होय ॥

(२६७)

कहत फिरत हम जोगी, पक्का दुइ सेर खाय ॥
पक्का दुइ सेर खाय, कहै मैं बड़का जोगी ।

---

(१) माथा । (२) हिसका ।

सोवै टाँग पसारि, देखत कै बड़ा बिरोगी ॥
हृष्ट पुष्ट होइ रहै, लड़न को नाहीं माँदा[१] ।
काम क्रोध और मोह, करत हैं बाद बिबादा ॥
पलटू ऐसा देखि कै, मुँह ना राखी लाय ।
कहत फिरत हम जोगी, पक्का दुइ सेर खाय ॥

(२६८)

जल पषान को छोड़ि कै पूजौ आतम देव ॥
पूजौ आतम देव खाय औ बोलै भाई ।
छाती दैकै पाँव पथर की मुरत बनाई ॥
ताहि धोय अन्हवाय बिंजन लै भोग लगाई ।
साच्छात भगवान द्वार से भूखा जाई ॥
काह लिये बैराग झूँठ कै बाँधे बाना ।
भाव भक्ति की मरम है कोइ बिरले जाना ॥
पलटू दोउ कर जोरि कै गुरु संतन को सेव ।
जल पषान को छोड़ि कै पूजौ आतम देव ॥

॥ इति ॥

---

(१) थका या निर्बल ।

हिन्दी पुस्तकमाला का सूचीपत्र

काव्य-निर्णय	१॥)
अयोध्या काण्ड	२)
आरण्य काण्ड	१)
सुन्दर काण्ड	१)
उत्तर काण्ड	१)
गुटका रामायण सजिल्द	॥)
तुलसी ग्रन्थावली	६)
श्रीमद् भागवत	॥)
सचित्र हिन्दी महाभारत	५)
फ्रान्स की राज्य क्रान्ति का इतिहास	।=)
कवित्त रामायण	।=)
हनूमान बाहुक	-॥)
सिद्धि	॥)
प्रेम परिणाम	॥)
सावित्री और गायत्री	॥)
कर्मफल	॥)
महारानी शशिप्रभा देवी	१)
द्रौपदी	॥)
नल-दमयन्ती	॥)
भारत के वीर पुरुष	२)
प्रेम-तपस्या	॥)
करुणादेवी	॥)
उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा सचित्र	॥)
सदेह सजिल्द	१)
नरेन्द्र भूषण	१)
युद्ध की कहानियाँ	।=)
गल्प पुष्पाञ्जलि	॥)
दुख का मीठा फल	१)
नव कुसुम (प्रथम भाग)	॥)
,, (द्वितीय ,,)	॥)

नाट्य पुस्तकमाला—

पृथ्वीराज चौहान	१)
समाज चित्र	॥)
भक्त प्रह्लाद	॥)

बाल पुस्तकमाला—

सचित्र बाल शिक्षा	(प्र० भा०)	।)
,, ,,	(द्वि० ,,)	।=)
,, ,,	(तृ० ,,)	।)
दो वीर बालक		॥)
घोंघा गुरू की कथा		।)
बाल विहार (सचित्र)		=)
हिन्दी कवितावली		=)
,, साहित्य प्रदीप		॥)
सती सीता		॥)
स्वदेश गान	(प्र० भा०)	-)
,,	(द्वि० ,,)	-)
,,	(तृ० ,,)	-)

चित्र माला—

प्रथम भाग	॥)
द्वितीय ,,	॥)
तृतीय ,,	१)
चतुर्थ ,,	१)

कथा-साहित्य

उलझी लड़ियाँ	(कहानी संग्रह)	१॥)
प्रवाह	(उपन्यास)	२॥)
चक्षु-दान	,,	१॥)

ऊपर लिखी एक साथ अधिक पुस्तक मँगानेवाले को तथा पुस्तक विक्रेताओं को संतोषजनक कमीशन दिया जायेगा।

पुस्तकें मँगाने का पता—मैनेजर, बेलविडियर प्रेस,

(प्रयाग विश्वविद्यालय के सामने) ११–डी मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद—